मध्य प्रदेश जनकारवां 2005

भूमंडलीकरण विरोधी जन अभियान
25 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2005 तक

संयोजक

भूमंडलीकरण विरोधी जनकारवां 2005, मालवा, निमाड़, मध्यप्रदेश बीज स्वराज अभियान मध्यप्रदेश, किसान संघर्ष समिति, मध्यप्रदेश, आदिवासी वन अधिकार अभियान, मध्यप्रदेश

सहयोगी

सम्पर्क ग्राम रायपुरिया, झाबुआ, विकास अनुसंधान एवं शैक्षणिक प्रगति संस्थान, इंदौर, स्पंदन संस्था, खंडवा, प्रयास, झाबंआ, नर्मदा बचाओ आंदोलन, बड़वानी, आदिवासी मुक्ति संगठन, आदिवासी एकता संगठन, आदिवासी दलित मोर्चा, धार, किसान संघर्ष समिति, मध्यांचल फोरम, आदिवासी विकास एवं नवचेतना समिति, तारापुर, धार, गैस पीड़ित महिला उद्योग समिति, प्रसून, खंडवा, जनसाहस, देवास

कहां, क्या........

क्र.	विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमांक
1.	जनकारवां में शामिल वक्ता एवं अन्य सदस्य	2
2.	जनकारवां के कार्यक्रम की रूपरेखा	3
3.	जनकारवां मार्गचित्र	4
4.	जनकारवां में उपयोग की गई विधियां	5
5.	पृष्ठभूमि	7
6.	जनकारवां के उद्देश्य	8
7.	पेटलावद में जनकारवां	9
8.	मेघनगर में जनकारवां	11
9.	दाहोद में जनकारवां	11
10.	भाभरा में जनकारवां	12
11.	बडवानी, लोनसरा, बुरहानपुर एवं खारगोन मे जनकारवां	12
12.	धामनोद में जनकारवां	14
13.	भीलगांव में जनकारवां	16
14.	छैगांव माखन में जनकारवां	18
15.	सिमरोल में जनकारवां	20
16.	इंदौर में सम्मेलन	21
17.	भोपाल सम्मेलन	24
18.	भोपाल प्रस्ताव	26
19.	गीतों के अंश	27
20.	नारों के अंश	28
21.	जनकारवां के प्रकाशन	29

जनकारवां में शामिल वक्ता एवं अन्य सदस्य

अतिथि वक्ता

1. विनय सागर महाराज
2. ऋतुश्री
3. डॉ. बनवारीलाल शर्मा, आजादी बचाओ आंदोलन
4. मनोज त्यागी, आजादी बचाओ आंदोलन
5. डा. सुनीलम्, (विधायक) किसान संघर्ष समिति
6. रूबीना शाह
7. उमेश
8. नरेन्द्र शर्मा
9. राजेन्द्र सिंह
10. मेधा पाटकर
11. डॉ. बी.डी. शर्मा

अन्य सदस्य

1. दिनेश अलावा, ग्राम तारापुर, धार
2. गिरधारी पटेल, वास्प्स/बीज स्वराज अभियान, ग्राम तारापुर, धार
3. भवरलाल टेलर, तिलोनिया, राजस्थान
4. बोदूराम कण्डरा, कोठड़ी राजस्थान
5. किशोर कुमार कण्डारा कोठड़ी, राजस्थान
6. रामलाल कालेट, ग्राम हरसोली,राजस्थान
7. कमलसिंह मईडा, ग्राम कलदेवा, थांदला, झाबुआ
8. गुमानसिंह भाबोर, ग्राम कलदेवा, थांदला, झाबुआ
9. रामचंद्र कटारा, ग्राम कलदेवा, थांदला, झाबुआ
10. भुरूभाई मुजाल्दे, प्रसून/बीज स्वराज अभियान, ग्राम अरडा, डही, धार
11. रामा मुणिया, ग्राम मनासिया, पेटलावद, झाबुआ
12. शम्भू वसूनिया, ग्राम रूणजी, पेटलावद, झाबुआ
13. रामलाल शुक्ला, ग्राम सुखडीया, पेटलावद, झाबुआ
14. कांजी हटिला, लोक जागृति मंच, ग्राम कालीघाटी पेटलावद, झाबुआ
15. मन्नूसिंह, लोक जागृति मंच, ग्राम सागडिया, पेटलावद, झाबुआ
16. रामलाल पाटीदार, ग्राम नावडी, पेटलावद, झाबुआ
17. निलेश यादव, सम्पर्क, रायपुरिया/बीज स्वराज अभियान, झाबुआ
18. शिरिष वर्मा, सम्पर्क, रायपुरिया/बीज स्वराज अभियान, झाबुआ
19. निलेश देसाई, सम्पर्क, रायपुरिया/बीज स्वराज अभियान, झाबुआ
20. भारत गुप्ता, रतलाम
21. हरीष यादव, पेटलावद, झाबुआ
22. फिरोज खान, पेटलावद, झाबुआ
23. अहमद खान, पेटलावद, झाबुआ

जनकारवां कार्यक्रम की रूपरेखा

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	समय	शामिल लोगों की अनुमानित संख्या
25.11.05	पेटलावद	रैली,	12:00 दोपहर	1200
		जनसभा	01:00 दोपहर	1200
	मेघनगर	जनसभा	11.00 सुबह	500
	दाहोद	रैली	03.30 दोपहर	100
		जनसभा	05.30 शाम	300
	भाभरा	रैली	08.30 रात	50
		जनसभा	09.30 रात्रि	200
	बड़वानी	रैली	11.30 सुबह	10,000
		जनसभा	12.30 दोपहर	3000
	लोनसरा	जनसभा	09.30 रात्रि	200
	बुरहानपुर	रैली	12:00 दोपहर	3000
		जनसभा		
28.11.05	खरगोन	जनसभा	08.30 रात्रि	200
			11:00 रात्रि	(बच्चे) 200
29.11.05	धामनोद	रैली	11.30 सुबह	100
	धामनोद मंडी	जनसभा	12.00 सुबह	200
29.1105	भीलगांव	रैली	6.00 शाम	150
		जनसभा	7.00 शाम	150
30.1105	छैगांव माखन	रैली	12.00 सुबह	100
		जनसभा	2.00 दोपहर	100
30.11.05	खंडवा	जनसभा	5.00 शाम	100
		रैली	6.00 शाम	100
30.11.05	सिमरोल	रेली	8.30 शाम	200
		जनसभा	9.00 शाम	300
01.12.05	इंदौर	सम्मेलन	12.00 सुबह	350
		रैली	4.00 शाम	250
		ज्ञापन	5.00 शाम	250
02.12.05	भोपाल	सम्मेलन	12.00 सुबह	400
		रैली	6.00 शाम	300

जनकारवां मार्गचित्र

1 पेटलावद	09 धामनोद
2 मेघनगर	10 भीलगांव
3 दाहोद	11 छैगांव माखन
4 भाभरा	12 खण्डवा
5 बड़वानी	13 सिमरोल
6 लोनसरा	14 इंदौर
7 बुरहानपुर	15 भोपाल
8 खरगोन	

जनकारवां के दौरान उपयोग की गई विधियां

रैली

मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र से जनकारवां में रैली सबसे मुख्य गतिविधि रही। इस गतिविधि के द्वारा गांव एवं शहरवासियों के बीच विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ न केवल उत्साह जगाया गया बल्कि आम लोगों के बीच एक संदेश प्रसारित किया गया।

नुक्कड़ नाटक

ग्रामीण क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से अपनी बात को लोगों के बीच फैलाना सुगम होता है। जनकारवां के दौरान भूमंडलीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों के असर को लागों के बीच रखा गया, जिसे स्थानीय लोगों ने रूचि से देखा।

जनसभा

जनकारवा के दौरान जनसभा एक खास गतिविधि रही। पूरी यात्रा के दौरान हर जगह जनसभा का आयोजन किया गया। इन जनसभाओं में कारवां में शामिल वक्ताओं के साथ ही स्थानीय लोगों ने भी उपस्थित जनसमुदाय के बीच अपने विचार रखे। जनसभा के दौरान वक्ताओं के विचार जहां लोगों के मन को छू रहे थे, वही सांस्कृतिक टीम द्वारा किये गये कार्यक्रमों ने लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

नुक्कड़ सभा

जनकारवां यात्रा के दौरान कई स्थानों पर तत्काल जरूरत के अनुसार नुक्कड़ सभाओं का भी आयोजन किया गया। इस सभा में जनकारवां में शामिल वक्ताओं ने अपने प्रखर विचारों से उपस्थिति जनसमुदाय के बीच एक संदेश जगाया।

प्रदर्शन एवं प्रदर्शनी

जनकारवां यात्रा के दौरान विश्व व्यापार संगठन एवं दुनिया के अविकसित एवं विकासशील देशों के रिश्तों एवं विश्व व्यापार संगठन के तानाशाह पूर्ण तरीकों को कलाकारों ने प्रदर्शन करके लागों के सामने रखा।

संवाद

जनकारवां के सफर के दौरान लोगों से भूमंडल विरोधी नीतियों के व्यापक असर के बारे में चर्चा एवं संवाद किया गया। कुछ स्थानों पर स्थानीय शिक्षाविद, विद्यार्थियों के समूह एवं व्यापारी संगठनों के साथ वाद–संवाद एवं चर्चा की गयी।

पुतलादहन

भूमंडलीकरण विरोधी इस जनयात्रा के दौरान मालवा एवं निमाड़ के कुछ स्थानों पर विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ पुतलादहन का आयोजन भी किया गया।

हस्ताक्षर अभियान

इस अभियान में में लोगों के जनसमर्थन को सामने रखने के लिए हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया। जहां जहां जनकारवां का दल पहुंचा, इस अभियान में स्थानीय लोगों को शामिल किया गया।

मशाल रैली

जनकारवां के अपने अंतिम पड़ाव भोपाल पहुंचने के बाद अंतिम दिन प्रदेश की राजधानी में मशाल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में जनकारवा के साथ ही भोपाल गैस पीड़ित संगठन ने महत्वपूर्ण हिस्सेदारी निभायी।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

जनकारवां के आठ दिवसीय सफर में सांस्कृतिक कार्यक्रम ने लोगों को जोड़ने एवं संदेश पहुंचाने में महत्वपूर्ण भमिका अदा की। सांस्कृतिक टीम में शामिल राजस्थान एवं झाबुआ के कलाकारों ने जनकारवां की यात्रा को रोचक बनाये रखा।

उपयोग किये गये उपकरण

मध्यप्रदेश के मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में जनकारवां के सफर के दौरान विभिन्न तरह की गतिविधियों के साथ ही कई प्रभावी टूल्स का उपयोग किया गया। इनमें प्रमुख रूप से कारवा का आकर्षक रथ शामिल था, जो पूरी यात्रा के दौरान लोगों का ध्यान खींचने में प्रभावी रहा। साथ ही पोस्टर, बैनर, नारों, परचों तथा वाद्यों ने यात्रा को आकर्षक बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

❀❀❀❀❀❀

पृष्ठभूमि

भूमंडलीकरण की वर्तमान व्यवस्था में पूरी दुनिया को एक बाजार में तब्दील किया जा रहा है। इस बाजार व्यवस्था में चीजों को वस्तु के रूप में देखा जाता है, जिसका खास मकसद होता है लाभ कमाना। आज दुनियां की प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियां इसी का फायदा उठा रही हैं। ये कंपनियां अब बाजार को और ज्यादा मुक्त क्षेत्र में बदलना चाहती हैं जिससे न केवल उनका मुनाफा बरकरार रख सके बल्कि दुनिया के संसाधनों का वह भरपूर इस्तेमाल कर सके। अब विकसित देशों की यह कंपनियां दुनिया के विकासशील एवं अविकसित देशों पर दबाव बनाना चाहती हैं। विकसित देशों में कृषि एवं गैरकृषि उत्पादनों पर भारी सब्सिडी दी जाती है। यही देश जो अपने उत्पादकों को भारी सब्सिडी देते हैं, विकासशील एवं अविकसित देशों पर सब्सिडी समाप्त करने का दबाब बनाते है ताकि उनके उत्पाद दुनिया में कहीं भी बाजार पर कब्जा जमा सकें। यह विकसित देशों की दुनिया पर साम्राज्य स्थापित करने का नया एवं मजबूत तरीका पिछले कुछ सालों से पुख्ता किया जा रहा है, जिससे दुनिया के कुछ ताकतवर वर्ग को दुनिया के तमाम संसाधनों को भोगते रहने का रास्ता हमेशा के लिए खुल जाये। इसी शोषकपूर्ण बाजार व्यवस्था को ढांचागत स्वरूप देने के लिए हांगकांग में विश्व व्यापार संगठन की मंत्री स्तरीय बैठक होने वाली है, जिसमें हमारे देश के वाणिज्य मंत्री भाग लेने वाले है। इस बैठक में दुनिया में व्यापार के लिए नीतिगत निर्णय होंगे। इस नीतिगत निर्णय से देश के आम लोगों का हित जुड़ा है। देश के किसानों, व्यापारियों एवं आम लोगों के हितों के साथ कोई अव्यवहारिक निर्णय न हो, इसीलिए देश भर में इस मुद्दे पर व्यापक बहस एवं विरोध की लहर फैली है। इसी बहस की कड़ी में मध्यप्रदेश में भी संस्थाओं, संगठनों एवं बुद्विजीवी वर्ग ने मिलकर इसे जनता के समक्ष रखने की जोरदार पहल की है।

इसके पूर्व में सम्पर्क द्वारा मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में सफेद सोना कही जानी वाली कमास फसल को चौपट करने वाली कंपनियों की किसान विरोधी नीति को जनता के समक्ष रखा गया। बीटी काटन के बीज के माध्यम से किसानों की कपास को बाजार से बाहर करने वाली मोंसेंटो कंपनी का व्यापक विरोध किया गया एवं सफलता हासिल की। इस बीज स्वराज अभियान से जनकारवा को बल मिला एवं मालवा एवं निमाड़ से निकला कारवां बीज स्वराज अभियान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

पिछले कुछ वर्षों में हुए कृषि एवं गैरकृषि क्षेत्रों में बदलावों के नतीजे जो सामने आये हैं। इन नतीजों से प्रभावित किसानों एवं आमलोगों की जो आवाज कुछ क्षेत्रों से उठी । उसी आवाज का संयोजन एवं मिलाजुला स्वरूप ही आज जनकारवां के रूप में प्रकट हुआ है।

भूमंडलीकरण

पूरे कांरवा के सफर के दौरान वक्ताओं के विचारों एवं स्थानीय लोगों के अनुभवों से भूण्डलीकरण के अर्थ को कुछ इसी तरह से समझा गया एवं लोगों के सामने रखा गया। वर्ष 1945 से 1970 के बीच का समय स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। इसी दौरान अमेरिका एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरा और पश्चिमी यूरोप और जापान की अर्थव्यवस्था को मदद देकर उभारा। इसी समय अपने देश को आजादी भी मिली थी। इसके बाद से ही आय के साधनों और धन के केन्द्रीयकरण निगमों एवं देशों के बीच तेजी से बढ़ा। बहुत कम समय में ही यानि नब्बे के दशक तक अमीर देशों के अमीर एवं गरीब देशों के गरीबों के बीच अंतर 60 के मुकाबले 1 हो गया। यही से भूमंडलीकरण का फैलाव एक जरूरत बन गयी और कल्याणकारी राज्य की संकल्पना को धक्का पहुंचना शुरू हो गया। अब जो धन का केन्दीयकरण हुआ था उसको खपाने का काम अविकसित देशों को किया जाने लगा बतौर ऋण के रूप में। यहीं से यह जरूरी हो गया कि विकासशील देश खुलेपन की नीति अपनायें जिससे धनी देशों की कंपनियों द्वारा तैयार माल की खपत बिना किया रोकटोक के हो सके। इसके लिए दुनिया के तमाम पूंजीवादी देश तरह–तरह के हथकंडे अपना रहे है। वे लोगों के विचारों, संस्कृति, शिक्षा आदि का स्वरूप ही बदल देना चाहते हैं जिससे उनके हिता के अनुरूप दुनिया का ढाला जा सके।

अब विकास की परिभाषा ही इन देशों ने बदल दी, यानि अब मुक्त बाजार,! कोई सरकारी नियंत्रण नहीं! गरीबों की मदद न करो। उहें बाजार के भरोसे छोड़ दो। उनके स्थान पर उन पैसों से हमें और अधिक ुनाफा कमाने में मदद करो! यही विकास है।

जनकारवां के उद्देश्य

- विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों को जनता के समक्ष उजागर करना
- आमलोगों के हितों से जुड़े मुद्दों पर बिना व्यापक स्तर पर बहस किये किसी भी तरह के समझौते न करने के लिए सरकार को आगाह करना
- आम लोगों की जिंदगी से जुड़े मुद्दों पर जनसमर्थन इकट्ठा करना एवं उसे सरकार एवं विश्व समुदाय के समक्ष रखना
- दुनिया में हो रहे बदलावों एवं जनहित से जुड़े मुददों पर लोगों के बीच जागृति पैदा करना

हम क्या चाहते हैं

- कि कृषि पर किसी भी तरह का समझौता न किया जाये क्योंकि कृषि निर्यात में भारत की हिस्सेदारी केवल 0.4 प्रतिशत है।
- भारत के संविधान में संशोधन करके यह सुनिश्चित किया जाये कि बिना संसद एवं अधिकांश विधानसभाओं की पुष्टि के बगैर कोई भी समझौता बंधनकारी न माना जाये।
- गैर कृषि विपणन समझौते को अमान्य किया जाये, जिससे घरेलू उद्योगों को बचाया जा सके।
- प्राकृतिक संसाधनों–खनिज, सामुकि संसाधन एवं वन संपदा में बड़ी कंपनियों का प्रवेश रोका जाये।
- आम लोगों से जुड़ी बुनियादी जरूरतों पर सब्सिडी खत्म करने के दबाव को न माना जाये।
- जब तक देश में भूख एवं निर्धनता है, तब तक खाद्यान्न का निर्यात न किया जाये।
- जल, जंगल, जमीन, पर आदिवासियों के अधिकारों को मान्यता दी जाये एवं पीढ़ियों से काबिज आदिवासी एवं दलितों को उनके अधिकार दिये जाए।

❀❀❀❀❀❀

पेटलावद, झाबुआ
ऐसे निकला जनकारवां का सफर

आज पेटलावद के लिए एक ऐतिहासिक दिन था जब इस शहर में दुनिया में आम लोगों के हितों की सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ जन अगुवाई की शुरूवात यहां से हो रही थी। आज बीज स्वराज अभियान के लिए स्थानीय लोक जागृति मंच के सदस्य, कास्तकार नियोजित तरीके से अपना एक संदेश लेकर प्रदेश के मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र के किसानों एवं आम लोगों को सचेत करने एवं विश्व व्यापर संगठन तथा बीटी कपास का कारेबार चलाने वाली मोंसेंटों जैसी कंपनियों के विरोध में अलख जगाने के लिए निकल रहे थे। यह बीटी कपास के बीज के खिलाफ एक बड़े जन आंदोलन की शुरूवात का दिन था। इस दिन आसपास के गांवों के किसानों एवं बडा जनसमूह रैली के माध्यम से पेटलावद में आम लोगों को किसानों के हितों की अनदेखी के खिलाफ जागृत कर रहा था। पेटलावद में एक बड़ी रैली कालेज से शुरू होकर तहसील कार्यालय सभास्थल तक निकाली गयी। जिसमें गांव के करीब 1000 लोग शामिल हुए। रैली में पोस्टरो, नारों, के माध्यम से भूमण्डलीकरण (विश्व व्यापार संगठन) का विरोध किया गया।

क्या है विश्व व्यापार संगठन

विश्व व्यापार संगठन एक विश्व के उन तमाम देशों का संगठन है जिन्होंने पूरी दुनिया में व्यापार संधि पर हस्ताक्षर किये हैं। इनमें से ज्यादातर देश विकासशील देशों के हितों की अनदेखी करते हैं। इस संगठन में पश्चिमी देशों का पूरा दबदबा है। यह अपने हितों के अनुसार नियमों को बनाते हैं और विवाद को सुलझाते हैं तथा राष्ट्र के बीच व्यापार संधियों को लागू करने के लिए निगरानी भी करते हैं। संगठन में अन्य कई राष्ट्रों को भी प्रतिनिधित्व दिया गया जिससे वे भी कुछ रियाते पा सकते हैं।

विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ पेटलावद में हुई जनसभा

कालेज से शुरू हुई रैली ने तहसील पहुंचकर एक जनसभा का रूप धारण कर लिया। इस जनसभा में गांव के किसान, व्यापारी, मजदूर के साथ ही ब्रजभूषण सिंह राठौर, कुलदीपसिंह भूरिया व पेटलावद के गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। सभा में विनयसागर, डा. बनवारीलाल शर्मा, नीलेश देसाई, रूणजी, शम्भू वसूनिया, लक्ष्मण मुणिया, आदि ने अपने विचार रखे। राजस्थान के कलाकारों ने गीत एवं वाद्य प्रस्तुति से सबका ध्यान आकर्षित किया। हरिशंकर पवार ने जनसभा का संचालन किया।

सभा में **शम्भू वसूनिया** ने सबको आगाह करते हुए कहा कि विदेशी कंपनियां देश में अपना वर्चस्व बनाना चाहती हैं, किसान भाई इन कंपनियों के इरादों को समझें एवं इनके बीजों को न खरीदकर उनका बहिष्कार करें। अपने बीजों को बोकर हम अपनी फसल से अच्छा उत्पादन ले सकते है।

लक्ष्मण मुणिया ने कुछ अनुभवों का जिक करते हुए बताया कि कई किसानों ने इन बीजों एवं खादों का उपयोग न करके अपनी फसल को सुरक्षित किया। स्वदेशी बीज से अधिक उत्पादन लिया। विदेशी कंपनियों के बीजों एवं खाद के उपयोग से फसल एवं भूमि की बर्बादी के उदाहरण भी लक्ष्मन जी ने सबके सामने रखा।

दोपहर की जनसभा के पश्चात् रात्रिकालीन पेटलावद तहसील के स्थानीय व्यापारियों के साथ जैन धर्मशाला पेटलावद में बैठक रखी गई जिसमें डॉ. बनवारीलाल शर्मा ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा किस तरह से खेती के निजीकरण, ई–चौपाल जैसे व्यापार में कुदकर देश के व्यापारियों के लिए भी अपने व्यापार में कठिनाई पैदा कर दी है। उन्होंने बताया कि ये कंपनियां व्यापारियों को बहुत कम लाभ देती है और अपने सामान का विज्ञापनों के माध्यम से प्रचार कर बाजार में अपना प्रभुत्व जमा रही है।

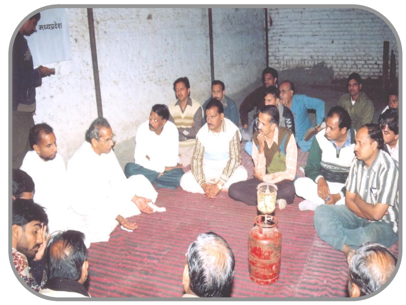

संत श्री विनयसागर जी ने भी बहुराष्ट्रीय कंपनियां पेप्सी, कोकाकोला व अन्य कंपनियों की पोल खोलते हुए इनकी असलीयत बताई कि किस तरह ये कंपनियां इन बाटलों में गाय, भैंसों की चर्बी से बने पदार्थ को डालती है। इन्हीं जानकारियों को बताते हुए संत जी ने सभी व्यापारियों से आग्रह किया कि वे अपनी एक कमेटी बनाकर इन कंपनियों के सामान को नहीं बेचे व जो बेच रही है उसका सामुहिक रूप से विरोध करे।

निलेश देसाई जी ने बी.टी. कपास की जानकारी देते हुए व्यापारियों को बताया कि मॉन्सेंटो कंपनी 1600 रू. के पैकेट में 1250 रू. का शुद्ध मुनाफा कमाती है जो कि अमरिकी बी.टी. कंपनी को जाता है और वह अपने बीजों के प्रचार के लिए अनेक तरह के नाजायज विज्ञापन प्रचारों से बीज बेचते है जैसे किसानों को पार्टियां देना, लड़कियों के डॉस कार्यक्रम रखना, बी.टी. कपास के अधिक उत्पादन के झूठे व भ्रामक पोस्टर छपवाना आदि बताते हुए देसाई जी ने बहुराष्ट्रीय कंपनियां के खिलाफ आमजनता के साथ–साथ व्यापारी वर्ग को भी आगे आने को कहा जिससे कि उनके पांव यहां न पसर पाए।

जब बीटी कपास की सच्चाई को उजागर किया गया जनसभा में

सभा में बोलते हुए **श्री निलेश देसाई** ने बीटी कपास की सचाई को उजागर करते हुए बताया कि पिछले दिनों किये गये अध्ययनों के निष्कर्ष बताते हैं कि बीटी काटन हमारे किसानों के लिए लाभदायी नहीं सिद्ध हो रहा है। इस बीज को बाजार में मॉसेंटो कंपनी ने प्रचारित करके जो झूठा वादा किया है, वह खोखला साबित हुआ है। अपने अनुभवों को लोगों के सामने रखते हुए श्री निलेश ने बताया कि बीटी काटन को बाजार में प्रचारित करने के पीछे एक सोची समझी रणनीति है जो हमारे किसानों को भ्रमित करके अपने बीजों को बाजार से बाहर करना चाहती जिससे किसान बीटी काटन ही बोने के लिए मजबूर हो जायें। आपने कहा कि मालवा एवं निमाड़ अंचल के किसान इन कंपनियों के भ्रमजाल में फंसकर बदहाल हो गये हैं। जिन किसानों ने कंपनी के झूठे वादों में फंसकर बीटी कपास बोया, उनके अनुभव बताते हैं कि 16 से 20 क्विंटल उत्पादन का दावा करने वाली कंपनियों के वादे न केवल झूठे साबित हुए हैं बल्कि किसानों को अंकुरण समस्या का सामना करने के साथ ही कीट नियंत्रण के लिए उच्च गुण्वत्ता वाली महंगी कीटनाशक दवाओं का भी उपयोग करना पड़ा। श्री देसााई ने बीटी कॉटन के दुष्परिणामों पर प्रकाश डालते हुए यह भी कहा कि यह न केवल खर्चीली है बल्कि इसका भूमि एवं हमारे स्वास्थ्य पर गहरा असर हो रहा है। और यदि विश्व व्यापार संगठन के साथ हम समझौता कर लेते हैं तो उसका सीधा असर किसानों पर व्यापक रूप से पड़ेगा।

बहुराष्ट्रीय कंपनियां

यह ऐसी कंपनियां हैं जिनका कारोबार कई देशों और महाद्वीपों के पार फैला हुआ है। इनका एक ही मकसद होता है येनकेन प्रकारेण मुनाफा अर्जित करना। इनके पास इतनी संपत्ति है कि कुल मिलाकर कई देशों के कुल बजट से भी ज्यादा एक कंपनी के पास ही है। इनके निर्णय लेने की प्रकिया पूरी तरह गोपनीय होती है। किसी एक देश का कानून का दायरा इन्हें प्रभावित नहीं कर सकता। अपने अपार संपत्ति के कारण यह दूसरे देशों की नीतियों को भी प्रभावित कर लेती हैं और केवल अपने बोर्ड के प्रति जवाबदेह होती है।

जब बीटी काटन के किसानों के अनुभवों को लोगों ने जाना तो बीटी काटन के बीजों की होली भी झाबुआ के किसानों ने जलाई। कई किसनों ने न्यायालयों की शरण ली एवं मुआवजा के लिए मुकदमा लड़ा एवं 1.6 लाख का मुआवजा पाया। किसानों की इस तरह की पहल से न केवल क्षेत्र के किसानों का जागृत किया बल्कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए एक संदेश भी है कि वे भारत के किसानों को धोख नहीं दे सकते हैं। अतः हम सब किसनों को इन कंपनियों के झूठे प्रचारों से बचकर अपनी रक्षा करना है एवं इसका विरोध हमें इनके बीजों, खादों, कीटनाशकों को न खरीदकर करना है।

डॉ. बनवारीलाल जी ने चेताया कि जिस तरह ईस्टइंडिया कम्पनी ने भारत में व्यापार के माध्यम से आयी और देश को गुलामी मिली , उसी तरह विश्व की हजारों कम्पनियां जब भारत में आयेंगी तो एक बड़ी गुलामी फिर से देश में आयेगी। यह जरूरी है कि इस शक्तिशाली भूत से अभी से निपटा जाये और देश से भगाया जाये।

क्रांतिकारी संत श्री विनयसागर जी ने कहा कि किस तरह से पेप्सीकोला, मोंसेंटो जैसी कंपनियां भारत के बाजार पर कब्जा कर रही हैं। यह कंपनियां बीज, दवा, मंडी, जमीन आदि पर कब्जा जमा रही हैं। कई सरकारी एजेंट इस काम में इन कंपनियों को मदद कर रहे हैं। इनके खिलाफ बड़ा आंदोलन खड़ा करके इन्हें भगाना होगा। जब हम यह तय कर लें कि इन कंपनियों को हम अपने देश में किसानों के बदहाल नहीं करने देंगे तो इन कंपनियों को भगाना बहुत आसान होगा।

मेघनगर में पहुंचा कारवां का मेघ

जनकारवां का अगला पड़ाव मेघनगर था, जहां बसस्टैंड हाट मैदान पर जनसभा का आयोजन किया गया जिसका संचालन राजेश बैरागी ने किया। सभा को संबोधित करते हुए डा. बनवारी ने देश के किसानों को बिदेशी कंपनियों के खिलाफ एकजुट होकर खड़े होने का आह्वान किया एवं जल, जंगल, जमीन एवं कृषि तथा लघु उद्योगों को चौपट करने वाली विश्व व्यापार संगठन की नीतियों का खुलासा किया।

सभा को संबोधित करते हुए **डॉ. सुनीलम्** ने विश्व व्यापार संगठन में भारत की स्थिति को रेखांकित करते हुए बताया कि यदि डब्ल्यू टी ओ के साथ समझौता होता है तो बिदेशी कंपनियों का प्रभुत्व होगा एवं देश गुलामी के ओर बढ़ जायेगा। हमें इसका विरोध कर रहे है एवं किसान विरोधी नीतियों को लागू नहीं होने देना चाहते हैं। यदि किसान विरोधी नीतियां लागू करवाने में विश्व व्यापार संगठन सफल हो जाता है तो हम सब किसनों की बरबादी को कोई नहीं रोक सकेगा। हम सबको मिलकर इस संगठन के इरादों को नाकाम करना है।

संत श्री विनयसागर जी ने कहा कि विश्व व्यापार संगठन बड़े व विकसित देशों की कठपुतली है। इस संगठन में उन्हीं देशों की नीतियों को आगे बढ़ाने का काम किया जाता है। आगामी बैठक में देश के वाणिज्य मंत्री जा रहे हैं। आपने सभी किसानों की ओर से उन्हें किसान विरोधी नीतियों के प्रति हस्ताक्षर न करने के लिए पत्र लिखने का अनुरोध किया।

दाहोद

जब जनकारवां ने रखा कदम गुजरात में

जनकारवां का तीसरा पड़ाव मध्यप्रदेश से लगे राज्य गुजरात के दाहोद नामक स्थान पर था। दाहोद में गुजरात के संगठनों एवं संस्थाओं ने जनकारवां का स्वागत किया तथा गुजरात एवं मध्यप्रदेश के संगठनों एवं संस्थाओं का आपस में परिचय हुआ।

मिलकर निकाली रैली दो प्रदेशों के लोगों ने

परिचय के बाद दोनों प्रदेशों की संस्थाओं व संगठनों ने मिलकर रैली निकाली एवं यह रैली दाहोद के कपड़ा बाजार चौराहे पर समाप्त हो गयी। कपड़ा चौराहे पर नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए डा. सुनीलम व विनयसागर ने कहा कि जिस तरह देश में निजीकरण हो रहा है, उससे जल, जंगल एवं जमीन एवं कृषि तथा व्यवसाय पर बिदेशी कंपनियों का शिकंजा बढ़ता जा रहा है। यह स्थिति किसानों, एवं लोगों के लिए बहुत गम्भीर समस्या पैदा कर रही है। हमें इसका कड़ा विरोध करना होगा।

इस नुक्कड़ सभा के साथ ही मध्यप्रदेश के साथियों ने गुजरात में जनकारवां की लहर फैलाने के लिए गुजराती साथियों, संस्थाओं, जनसंगठनों को कारवां की मटकी सौंपी। देशी बीजों की मटकी एवं प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र के साथ यहीं से गुजरात जनकारवां का आर्विभाव हुआ और इस कारवां ने गुजरात में विश्व व्यापार संगठन के खिलाफ लोगों को लामबंद करने एवं जनता में एकजुटता पैदा करने का संकल्प लेते हुए अपने अगले पड़ाव की तरफ निकल पड़ा। इस कारवां में मध्यप्रदेश की जनता के द्वारा हस्ताक्षरित एक बैनर भी साथ गया जो गुजरात के किसानों एवं लोगों को दूसरे राज्यों के संदेश के लिए समर्पित था।

भाभरा

गुजरात में जनकारवां की लहर जगाने के बाद वापस मध्यप्रदेश का कारवां फिर से प्रदेश में दाखिल हुआ और उसका अगला पड़ाव भाभरा था, जहां एक रैली निकाली गयी। इस रैली की समाप्ति के बाद एक जनसभा का आयोजन किया गया। गांधी चौक पर आयोजित इस सभा में संबोधित करते हुए **डॉ. सुनीलम्** ने बताया कि विश्व व्यापार संगठन की नीतियों से भारत के किसानों, व्यापारियों एवं लोगों का नुक्सान हो रहा है। विदेशी कंपनियां भारत पर कब्जा जमाने के लिए अपना प्रभाव बढ़ा रही हैं एवं विश्व व्यापार संगठन के माध्यम से यह कंपनियां एवं इन कंपनियों को मदद करने वाले विकसित देश विश्व में अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं।

बड़वानी

भाभरा से बड़वानी पहुंचकर नर्मदा बचाओं आंदोलन के 20 वर्ष पूर्ण होने पर संगठन द्वारा आयोजित किसान रैली में जनकारवां ने जुड़कर अपनी सहभागिता दी। जिसमें जनकारवां रैली का मुख्य आकर्षण बना। रैली के पश्चात् जिलाधीश कार्यालय चौराहे पर जनसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में बी.डी. शर्मा, डॉ. बनवारीलाल जी, मनोज त्यागी, मेधा पाटकर, राजेन्द्र सिंह, डॉ. सुनीलम् और बहुत से संगठन के सदस्य उपस्थित थे। सभी ने अपने भाषण में बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आड़े हाथों लिया।

मेधा पाटकर ने विश्व व्यापार संगठन की विरोधी नीतियों के प्रभाव को रेखांकित किया व पानी के निजीकरण एवं उसके प्रभावों के स्पष्ट किया।

सभा में बोलते हुए **राजेन्द्रसिंह** ने पानी के निजीकरण से उपजे सवालों को दोहराया एवं दिल्ली का उदाहरण देते हुए बताया कि दिल्ली सरकार ने यमुना के पानी को विदेशी कंपनियों के हाथों को

सौंपकर दिल्लीवासियों को पानी के संकट पर खड़ा कर दिया है और अब सरकार इस समस्या को सुलझाने के लिए कुछ नहीं कर पा रही है। अतः समय रहते ही समस्या को भांपकर हमें मजबूत कदम बढ़ाना होगा जिससे समस्या उस स्तर तक न पहुंच जाये कि हमारे हाथ में ही कुछ न रहे।

लोनसरा

बड़वानी से जनकारवां आगे बढ़ते हुए लोनसरा पहुंचा एवं गांव में एक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में गांव के लगभग 200 लोग उपस्थित थे। उपस्थित जनसमूह को जनकारवां के उद्देश्यों से परिचित कराते हुए निलेश देसाई ने बताया किया बिदेशी कंपनियां तरह तरह के वादे करके किसानों की खेती को बर्बादी के रास्ते पर खड़ा कर रही हैं। उन्होंने बी.टी. काटन के अनुभवों को बांटते हुए कहा कि बी.टी काटन बीज जो मोंसेंटो कंपनी का बीज है। इस बीज के आने से न केवल कपास की अपनी परम्परागत फसल पर प्रभाव पड़ रहा है बल्कि इसका प्रभाव भूमि एवं हमारे स्वास्थ्य पर भी बुरी तरह से पड़ रहा है। इससे किसानों को जो फायदे कंपनी द्वारा गिनाये गये थे, वह कहीं भी नहीं मिले हैं जबकि कई किसानों की फसल में नुक्सान हुआ है। गांव के उपस्थित जनसमूह ने बी.टी. काटन के इस अनुभव से अवगत होकर इससें किनारा करने का संकल्प लिया।

बुरहानपुर

बुरहानपुर में जनकारवां द्वारा गांधी चौक में जनसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में डा. सुनीलम्, बी. डी. शर्मा, बनवारीलाल शर्मा, मनोज त्यागी, विनय सागर, नीलेश देसाई आदि ने आदिवासियों के जल, जंगल, जमीन व कृषि पर अधिकार एवं विश्व व्यापार संगठन की नीतियों को उजागर करते हुए कहा कि विदेशी कंपनियों का प्रहार अब हर स्तर पर होने वाला है। इस प्रहार से आगामी समय में देश की खेती एवं किसान कंगाल हो जायेंगे। हम इन सबसे समय रहते कदम उठायें तो बच सकते हैं।

खरगोन

खरगोन शहर के पोस्ट आफिस चौराहे पर रात्रि को एक जनसभा का आयोजन किया गया। राजस्थान के कलाकारों ने गीत एवं वाद्य से जनसभा को आकृष्ट किया। सभा में बोलते हुए डॉ. सुनीलम ने विश्व व्यापार संगठन की बैठक का जिक्र करते हुए बताया कि वहां कृषि के मुद्दों पर भी नीति बनने वाली है। हमारे देश मे कृषि व्यापार का विषय नहीं है, यह लोगों की आजीविका से जुड़ा प्रश्न है। हमारी सरकार बाहरी कंपनियों के दबाव में अधिक उत्पादन एवं विदेशी मुद्रा अर्जित करो की नीति पर बल दे रही है। कई बाहरी देशों में उत्पादन बहुत अधिक है, वहां उत्पादन सड़ रहा है। अब वह अपने देश के उत्पादन के लिए बाजार ढूंढ रहे हैं जिससे उनके देश का उत्पादन किसी भी भाव में उसे खपाया जा सके। अब उन्हें किसी भी दाम पर बाजार चाहिए, इसलिए तरह तरह के हथकंडे अपनाकर हमारी बाजार व्यवस्था को कमजोर करना चाहते है जिससे उनके लिए बाजार खुल जाये। अब सरकार पानी, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ ही कृषि को बिदेशी कंपनियों के भरोसे छोड़ रही है। जब सरकार अपने खिलाफ काम करने लगे तो हमें ही लड़ने के लिए आगे आना पड़ेगा और अपनी लड़ाई खुद ही लड़ना होगा।

मनोज त्यागी ने कहा कि बिजली, पानी, खाद, बीज अब गरीब लोगों की पहुंच से दूर होती जा रही हैं। इसका जवाब सरकार के पास नहीं है क्योंकि अब सरकार की नीतियां बाहरी दबाओं में बनती हैं, बाहरी मुल्कों के फायदों के लिए बनती हैं। जिसका असर यह हो रहा है कि अब आधारभूत सुविधाएं भी बाजार के भरोसे छोड़ी जा रही हैं। आम लोगों की जिंदगी से जुड़े सवाल अब गम्भीर होते जा रहे हैं। किसान, व्यापारी, नौकरीपेशा वर्ग सब बदहाली के ओर बढ़ रहे हैं। अब कैसे इस बदहाली से बचा जाये। कैसी लड़ाई इसके लिए लड़ी जाये। अब धरना आंदोलन का असर भी नहीं होता है। अब तो ऐसी लड़ाई की जरूरत आ पड़ी हैं जिससे सरकार और विदेशी कंपनियों के इरादों को मजबूत चुनौती दी सके। सरकार अब हमारे पक्ष में नहीं खड़ी है, जब सरकार ही हमारे हितो की अनदेखी करने लगे तो हमें कौन बचायेगा। अब हमें अपनी रक्षा खुद ही करनी होगी और आगे आना पड़ेगा।

रात्रि में ही उत्कृष्ट विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ नुक्कड़ नाटक व पपेट शो के माध्यम से विश्व व्यापार संगठन की नीतियों के दुष्परिणाम, उससें भविष्य में आने वाली समस्याओं की जानकारी दी। इस कार्यक्रम में बच्चों एवं शिक्षकों ने उत्साह से हिस्सा लिया।

अगले दिन खरगोन कृषि उपज मंडी में जनसभा का आयोजन किया गया। इस सभा में मनोज त्यागी ने अपने विचार रखते हुए ई चैापाल के के असली मकसद को किसानों के सामने रखा और बताया कि ई चौपाल के द्वारा किसानों को लालच देकर अच्छे दामें में खरीदा जा रहा है। इसका खास मकसद यह है कि किसानों एवं मंडी पर नियंत्रण करना। बाद में इसी ई चौपाल से आई टी सी अपनी मर्जी के अनुसार खरीद कर सकेगी। सभा में बी.टी कपास के दुष्परिणामों एवं मोसेंटो कंपनी द्वारा किये गये वादों का जिक्र करते हुए नीलेश देसाई ने बताया कि निमाड़ क्षेत्र में व्यापक सर्वेक्षण पर आधारित अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि कंपनी के वादे झूठे साबित हो रहे हैं एवं किसान को भारी नुक्सान उठाना पड़ा है।

धामनोद

धामनोद आगरा से मुम्बई जाने वाले राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित इस क्षेत्र की बड़ी मंडी है, जहां कपास, सोयाबीन, गेहूं, चना आदि उपज बड़ी मात्रा में किसान बेचने के लिए लाते हैं। आज यहां भूमंडलीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन विरोधी जनकारवां ने बाजार एवं मंडी क्षेत्र में लोगों को कौतूहल भरे माहौल में विश्वव्यापी मुद्दों की तरफ ध्यान खींचा और अपने से जुड़े गहरे विषयों पर सोचने को विवश कर दिया।

खरगोन की मंडी में जनसभा के आयोजन के बाद मध्यप्रदेश जनकारवां का दल सुबह 11 बजे धामनोद पहुंचा एवं आदिवासी जन चेतना विकास समिति तारापुर द्वारा आयोजित आकर्षक रैली को बड़े स्वरूप में तब्दील कर दिया। शासकीय कन्या विद्यालय धामनोद के पास जनकारवां के स्वागत के साथ रैली निकाली गयी। रैली में जहां जनकारवां एवं बीज स्वराज अभियान, सम्पर्क का रथ एक नया संदेश एवं उत्साह पैदा कर रहा था, वहीं विश्व व्यापार संगठन एवं भारत के रिश्तों को उजागर करने वाला प्रदर्शन तथा राजस्थानी कलाकारों द्वारा बिगुल जैसा वाद्य लोगों का ध्यान खींच रहा था। सैकड़ों की संख्या में गांव से आयी महिलाए एवं पुरूष, कार्यकर्ता पोस्टर, बैनरों, परचों के साथ विश्व व्यापार विरोधी नारों से लोगों में उत्साह जगा रहे थे।

इस रैली के दौरान कई लोगों में यह जानने की उत्सुकता दिखी कि यह कारवां क्यों निकला है। किसान, व्यापारी, दुकानदार सब बड़े कौतूहल से पूछ रहे थे कि इससे क्या होगा, क्यों यह रैली निकल रही है आदि। रैली में शामिल लोग जहां कुछ लोगों को समझा रहे थे, वहीं कुछ को परचे पढ़ने के लिए बांट रहे

थे। लोगों को प्रभावित करने वाली विश्व व्यापार संगठन की नीतियों से सब अनभिज्ञ थे। जब उन्हें इन मुद्दों पर सही जानकारी मिली तो सबने समर्थन जाहिर किया एवं कुछ लोग तो साथ हो लिये।

निमाड़ की सबसे वड़ी मंडी में हुई जनसभा

आदिवासी जनचेतना एवं विकास समिति द्वारा आयोजित जनसभा में कारवां साथियों का स्वागत करते हुए वास्प संस्था के एम.एल. यादव ने भूमंडलीकरण एवं विश्व व्यापार संगठन विरोधी नीतियों के खिलाफ जनमत जुटाने एवं लोगों एवं सरकार को इन नीतियों के प्रति सचेत करने के लिए निकले मध्यप्रदेश जनकारवां का परिचय कराया तथा सभा के संचालन के लिए बीज स्वराज अभियान के अगुआ जनकारवा के साथी नीलेश देसाई को आमंत्रित किया। निलेश देसाई ने सभा की शुरूआत करते हुए बताया कि आज 58 साल की आजादी के बाद भी हमें जमीन, पानी, आजीविका की लड़ाई लड़नी पड़ रही है। पिछले 10 सालों की नीतियों पर गौर करें, जब से भारत विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बना तो हमें नीतिगत बदलाव का असर सामने यह दिखता है कि आज आदिवासी, किसान, महिलाएं, परेशान हैं। सब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। कहीं आदिवासियों से जंगल से खदेड़ा जा रहा है तो कहीं उन पर जुल्म ढाये जा रहे हैं। कहीं किसान आत्महत्या कर रहे हैं तो कहीं उनकी फसल चौपट हो रही है और कहीं फसल को फेकना पड़ रहा है। बहुराष्टीय्र कंपनियों का जाल देश में बढ़ता जा रहा है। पिछले सालों में उनका प्रभाव कृषि क्षेत्र में तेजी से बढ़ा है, आज कंपनियां खाद, बीज, कीटनाशक बेच रही हैं। खाद बीज का भाव बढ़ रहा है एवं फसल का भाव घट रहा है। 450 ग्राम बी.टी. काटन का बीज 1800 में बिक रहा है। आज यह हालत क्यों हो रही है , किसान के साथ अन्याय की स्थिति कैसे बन रही है, किसान एवं मजदूर मजबूर क्यों बन रहे हैं। यह सब जानना एवं समझना जरूरी है। इन्हीं सब सवालों को उठाने एवं जनता के सामने रखने के लिए यह कारवां पूरे प्रदेश में निकला है।

जनसभा में मंडी पर आ रहे संकटों एवं आदिवासी किसान को जमीन से बेदखल करने तथा विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों को सबके सामने रखने के लिए आदिवासी चेतना मंच के कार्यकर्ताओं ने एक नाटक का प्रदर्शन किया। इस नाटक में फसल सुरक्षा, जल, जंगल, जमीन से जुड़े ज्वलंत मुद्दों का डठाने का प्रयास किया गया।

सभा को संबोधित करते हुए **संतश्री विनय सागर** ने कहा कि दुनिया के कुछ विकसित देशों की कंपनियों ने अपना एक संगठन बना लिया है, जिसे आज विश्व व्यापार संगठन के नाम से जाना जा रहा है। इस संगठन के जरिये विकसित देशों की कंपनियां पूरे संसार के संसाधनों पर कब्जा जमाना चाहती हैं। इसी उद्देश्य से यह कंपनियां अपने धनबल से दुनियां की सरकारों को प्रभावित करके अपने अनुसार नियम कायदे बनवाने में कामयाब हो जाती हैं। जिसका नतीजा आम जन को भुगतना पड़ता है। देश की सरकार में शामिल लोग भी इनसे सांठगांठ कर लेते हैं। देश की जनता द्वारा चुनी हुई सरकार के लोग जब इनसे मिल जाते हैं तो जनविरोधी नीतियों को उनका समर्थन होता है। आज से हमें यह संकल्प लेना होगा कि हम विश्व व्यापर संगठन के सामने नहीं झुकेंगे, हम उसके बनाये कानून को नहीं मानेंगे। यदि हमारी सरकार विश्व व्यापार सेंगठन द्वार बनाये गये कानून को समर्थन करती है तो भी हम सरकार का विरोध करेंगे। हम किसी के दबाव में नहीं आयेंगे। अना बीज एवं खाद तैयार करेंगे। अपनी खेती की सुरक्षा करेंगे।

लोक जागृति मंच के **लक्ष्मण मुनिया** ने बी.टी. काटन जो कि विदेशी कंपनी द्वारा बनाया गया बीज है के अनुभ्वों को बताते हुए कहा कि विदेशी कंपनियां हमारी कृषि पर कब्जा जमाना चाहती

हैं। वे किसानों को लालच देकर महंगा बीज बेज रहे है जबकि उसका फायदा किसानों को उतना नहीं मिला जितना उन्हों ने बताया। झाबुआ के कई किसानों ने बीटी काटन का बहिष्कार किया।

अब संसद पर भी भरोसा नहीं

सभा में बोलते हुए आजादी बचाओ आंदोलन के **मनोज त्यागी** ने अपने अनुभवों को बताते हुए कहा कि किसान हर जगह परेशान है। पंजाब का किसान कर्जदार हो रहा है। गांव नीलाम करने की बात तक पंजाब में सुनने को मिली। बिहार के मक्का की पैदावार किसानों का नहीं मिली। उत्तर प्रदेश में धान की खेती का मूल्य किसानों को नहीं मिल रहा है क्योंकि बाहर का चावल बिक रहा है। राजस्थान में सरसों का दाम नहीं मिल रहा है क्योंकि बाहर का तेल बिक रहा है। गंजबासोदा के किसानों ने प्रदर्शन किया क्योंकि वहां विदेशी मंडी बन रही है। व्यापारी भी परेशन है, क्योंकि विदेशी कंपनियां सस्ता माल बेच रही हैं। बैंक एवं बीमा क्षेत्र में भी विदेशी कंपनियां आ रही हैं। सब खेत्रों पर विदेशी कंपनियों को छूट मिल रही है। सड़क, बिजली, अस्पताल के बाद अब जल, जंगल, जमीन भी विदेशी कंपनियों के भरोसे छोड़ने की मुहिम चल रही है। पूरे देश के विकास का जिम्मा ही अब हमारी सरकार देसरे के हाथ में सौंपने ामन बना रही है। अब सवाल यह भी खड़ा हो रहा है कि हम क्या करेगे। किसान के पास केवल जमीन है, जो आजीविका का आधार है। जीवन मरण का सवाल जब सामने आ जाये तो हमें आगे आना ही होगा। अब सरकार एवं संसद या विधानसभा के भरोसे नहीं रहा जा कता। इस गंभीर स्थिति को आगे बढ़ने से रोकना होगा, हमें आगे आना होगा। कोई आसान रास्ता नहीं है। कुछ आशा की किरण देश के कोने कोने से निकल रही है। हमें भी उनसे सीख लेकर आगे कदम बढ़ाना होगा। कर्नाटक में लोगों ने कारगिल कंपनी को आग लगा दी। केरल के किसानों ने बाहरी माल वापस किया। संघर्ष में सफलता है।

मंड़ियों पर खतरा

अंत में निमाड़ क्षेत्र की सबसे बड़ी मंडी में सभा को संबोधित करते हुए **डा. सुनीलम्** ने कहा कि इस मंडी को खतरा पैदा हो गया है। सरकार ने समर्थन मूल्य पद्वति को समाप्त करने का मन बना लिया है। आजादी के बाद किसानों को जो देने का वादा किया था, वह अब खतरे में पड़ गया है। खाद बिजली पर सब्सिडी को सरकार खत्म कर रही है। यह सब बदलाव देश से बाहर हो रहे हैं कि देश का किसान क्या बोयेगा, कौन सी खाद डालेगा। यह सब फैसले दुनियां के विकसित देशों की कंपनियों के दबाव में लिये जा रहे हैं। इन फैसलों के लिए जनता की राय को भी नजरंदाज किया जा रहा है। हिंदुस्तान लोकतांत्रिक देश हैं, लोकतंत्र में जनता का राज चलता है। हम इस देश में ऐसी कोई बात नहीं होने देंगे, जो जनता से बगैर पूछे की जाये। ऐसे समझौतों को हम कागज का टुकड़ा मानेंगे।

मूल काम तो सरकार है, पर सरकार को हमारी फिकर नहीं है। जिंदगी तो हमे जीनी है। इसलिए आगे हमें ही आना होगा। यदि हम ताकत बनायेंगे तो सरकार हमारी बात सुनेगी। अपने अधिकारों की लड़ाई का संकल्प हमें ही लेना होगा। संघर्ष ही एक बड़ा तरीका है। हमारा अनुभव रहा है कि लड़कर ही कई काम सफल बनाया है। बिना लड़े अब इस देश में कुछ मिलने वाला नही है। आंदोलन में कुछ दिक्कतें भी आ सकती हैं पर यदि हम आगे बढ़े तो बढ़ते जायेगे।

भीलगांव

जनकारवां का अगला पड़ाव भीलगांव था। भीलगांव पहुंचने के बाद पूरे गांव में जनकारवां की लहर शीघ्र फैल गयी एवं गांव के लोग जमा हो गये। सबके मन में यही सवाल था कि यह कारवां हमारे गांव में क्यों आया है, इसका मकसद क्या है। गांव के पंचायत भवन से रैली निकाली गयी जो पूरे गांव के गली मोहल्ले से घूमते हुए वापस पंचायत भवन पर आकर एक जनसभा के रूप में तब्दील हो गयी। रैली का उत्साह गांव के किसानों, महिलाओं एवं बच्चों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। गांव की महिलाएं बच्चे छतों, अपने घर के दरवाजों से बड़ी उत्सुकता से रैली देख रहे थे और सवाल पूछ रहे थे। जनसभा में गांव के लोगों ने जनकारवां के साथ आये लोगों का स्वागत किया एवं तत्पश्चात् गांव के लोगों के मन में जो सवाल था कि यह कारवां क्यों निकला है। उसका जवाब देने के लिए **निलेश देसाई** ने अपनी बात

रखते हुए बताया कि पिछले सालों में कृषि नीति में जो बदलाव हो रहे हैं एवं जिसका नतीजा किसानों को भुगतना पड रहा है। उसी के कुछ अनुभवों एवं हकीकतों को आपके सामने रखने के लिए यह कारवां निकाला है। आपने बीटी काटन का उदाहरण सबके सामने रखा कि किस तरह बीटी काटन के अधिक उत्पादन के कंपनियां के प्रचार के लालच में किसान फंसकर बर्बाद हुआ। इस कारवां के द्वारा विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ जनमत इकठ्इा करके उसे हटाना है।

कल्याणकारी बनाम निजीकरण

डॉ. सुनीलम् ने अगले कुछ दिनों में चीन में होने जा रही विश्व व्यापार संगठन की बैठक का जिक्र करते हुए बताया कि दुनिया के तमाम देश मिलकर व्यापार की नीति बनाने वाले हैं। वहां कृषि के मुद्दों पर भी नीति बनने वाली है। हमारे देश मे कृषि व्यापार का विषय नहीं है, यह लोगों की आजीविका से जुड़ा प्रश्न है। हमारी सरकार अधिक उत्पादन एवं विदेशी मुद्रा अर्जित करो की नीति पर बल दे रही है। आज केवल .4 प्रतिशत कृषि व्यापार भारत में हो रहा है। विश्व व्यापार सगठन में यह तय हाने वाला हैं कि दुनिया का सामान भारत में बिना किसी टैक्स के बेचने की छूट होगी। जब बाहर का माल आयेगा तो अपना माल सस्ते में बेचना पड़ेगा। वहां की सरकार किसानों को 250 प्रतिशत तक सब्सिडी देती हैं उनके उत्पादन के सामने हम कैसे टिकेंगे। कई बाहरी देशों में उत्पादन बहुत अधिक है, वहां उत्पादन सड़ रहा है। जब सड़ रहा है तो कोई तो बाजार चाहिए जहां किसी भी भाव में उसे खपाया जा सके। वह हमसे कहते है कि हमसरा माल सस्ते में खरीदो, पर हमारे किसान कहां जायेंगे, वे किसे बेचेंगे। अब सरकार पानी, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ ही कृषि को बिदेशी कंपनियों के भरोसे छोड़ रही है। बाजार में नकली खाद, कीटनाशक, बीज बिक रहे हैं। राज्यपाल ने कहा कि जो नकली माल, खाद, बीज बेचेगा उसे अपराधी माना जायेगा। क्या यूनियन कार्बाइड के किसी व्यक्ति को सजा हुई। सरकार अब कल्याणकारी काम छोड़कर निजीकरण की नीति को बढ़ावा दे रही हैं वह अपने पक्ष में अब काम नहीं करने वाली। जब लोगों के द्वारा चुने जनप्रतिनिधि लोगों पक्ष में खडें न हो तो लोगों को खड़ा होना पड़ेगा। राज्य जब अपनी जिम्मेदारी से पीछे हटने लगे तो हमें आगे आना पड़ेगा। जब सरकार अपने खिलाफ काम करने लगे तो हमें ही लड़ने के लिए आगे आना पड़ेगा।

मनोज त्यागी ने कहा कि आज किसान के सामने बिजली, पानी, खाद, बीज का गम्भीर संकट खड़ा हो गया है। इन सब वस्तुओं पर सरकार की सहायता में कमी आ रही है और यह वस्तुएं महंगी होती जा रही हैं या गरीब लोगों की पहुंच से दूर होती जा रही हैं। यह सब क्यों हो रहा है। क्यों किसान कर्ज में डूबता जा रहा हैं । इसका जवब सरकार के पास नहीं है क्योंकि अब सरकार की नीतियां बाहरी दबाओं में बनती हैं, बाहरी मुल्कों के फायदों के लिए बनती हैं। विश्व बैंक के हम कर्जदार हैं। विश्वबैंक दुनियां के कुछ विकसित देशों का बैंक है। उसे चिंता हुई कि यदि भारत सामाजिक कामों में ज्यादा खर्च करेगा तो हमारा कर्जा कैसे लौटायेगा। विश्व बैंक ने अपना कर्जा वापस करने के लिए सुझाव देता है कि सामाजिक क्षेत्र के बजट में कटौती करो। कल्याणकारी कामों को निजी हाथों में सौंप दो। जिसका असर यह हो रहा है कि अब आधारभूत सुविधाएं भी बाजार के भरोसे छोड़ी जा रही हैं। आम लोागों की जिंदगी से जुड़े सवाल अब गम्भीर होते जा रहे हैं। किसान, व्यापारी, नौकरीपेशा वर्ग सब बदहाली के ओर बढ़ रहे हैं। अब कैसे इस बदहाली से बचा जाये। कैसी लड़ाई इसके लिए लड़ी जाये। अब धरना आंदोलन का असर भी नहीं होता है। अब हमें जनता की संसद में ही फैसला करना होगा एवं आगे आकर उसे करके दिखाना भी होगा। अगर हम आगे आ गये तो कोई नहीं रोक सकेगा।

किसानों को उनके हाल पर छोड़ दो

यह बात **संतश्री विनय सागर** ने भीलगांव में कही। आपने बताया कि दुनिया के दूसरे देश की कंपनियां कहती है कि भारत के किसान खेती करना नहीं जानते हम उनसे अधिक उत्पादन उन्हें दे सकते हैं, अपनी जमीनें हमें दे दो। वे ठेकेदारी प्रथा पर खेती करवाना चाहते हैं। विकसित देश हमारी जंगल, जमीन, पानी पर पूरा कब्जा जमाना चाहते हैं। 1942 में बंगाल में अकाल पड़ा था। यह प्राकृतिक अकाल नहीं था यह बनाया गया अकाल था। और अब विश्व व्यापार संगठन ऐसी ही जुगत बना रहा है कि हम अपनी जमीन, अपने पानी, अपने जंगल को भी भूल जायेंग। हमारी सरकार जिसे हम चुनते हैं है अब हमारी नहीं रही। जनप्रतिनिधि जनता की सेवा की बात करते हैं, वे झूठ बोलते हैं, वे जनता की सेवा नहीं करते, बल्कि जनता उनकी सेवा करती है। आज हमारे देश के राष्ट्रपति पर प्रतिदिन 5 लाख रूपयें का खर्च आता है। संसद पर लाखों का खर्च रोज आता है। जिस देश में 55 करोछड़ बेरोजगार हों, 40 प्रतिशत गरीब हो उस देश में संसद, सरकार, का खर्चा इतना ज्यादा बेमानी है। यदि हम दोबारा गुलामी

में फंस गये तो नहीं बचेंगे, यह गुलामी जमीनी होगी जिससे निजात मुश्किल होगी। हमारे देशी मीजाफरों की पहचान हमें करनी होगी और उन्हें सबक सिखाना होगा। हमें सरकार के उपर दबाव बनाना होगा। सब मिलकर सरकार को पत्र लिखें कि हमारी सहमति के बैर किया गया कोई समझौता हमें मान्य नहीं होगा। हम उसे केवल कागज का टुकड़ा मानेंगे। हम इस गांव से शंखनाद करें, यही अपेक्षा है।

भारतीय किसान बनाम अंतर्राष्ट्रीय किसान

कालूसिंह मंडलोई, पुर्व सरपंच, भीलगांव ने सभा में कहा कि आज हामारे देश का नेतृत्व करने वाले क्या कर रहे हैं, कैसा समझौता करते जा रहे हैं। आज देश के किसान जो बदहाल है। जिन्हें बिजली, पानी, खाद बीज के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। उन किसानों को दुनिया के तमाम देशों के किसानों से लड़ने के लिए खड़ा कर दिया हैं पहले हम गांव का किसान रासायनिक खाद नहीं जानता था, यह तो हमारे उपर थोप दियो हैं आज यह हालत हो गयी है कि बिना रासायनिक खाद के कुछ होता ही नहीं। अब तो किसान के पेट का सवाल सामने आ गया हैं आिज बिजली का रेट 2..40 रू. है और बिजली दिन में आठ बार जाती है, बिल 5000 आता हैं। हमारे लिए लड़ाई करने वाले इस जनकारवां के हम साथ हैं।

जीवित से जीवित का संबंध

भीलगांव में जनसभा के सामने किसान **सुरेंद्र मंडलोई** ने बताया कि वे पिछले 13 सालों से बिना रसायन के खेती कर रहे हैं ओर अधिक उत्पादन ले रहें ह। आपने बताया कि शुरू में कुछ नुकसान होता है पर हम अपनी जमीन वं अपनी फसल को सुरक्षित कर सकते हैं और उत्पादन भी बढ़ा सकते हैं। आज की क्रांति में हम जो अपना नुक्सान कर रहे हैं उससे न तो हमें फायदा मिलेगा बल्कि हम अपना सब कुछ गंवा बैठेंगे। अपनी ही फसल से हम अपने को रोगी बना लेंगे। अपने जानवरों को रोगी बना लेगें और जो कुछ थोड़ा मुनाफा होगा वह बाजार में जायेगां हमारी खुशहाली में साथ नहीं देगा। यदि हमें असली क्रांति को लाना है तो रसायनिक खाद को त्यागना होगा। उसका विकल्प हमारे पास है हम जीवित का जीवित से से नाता जोड़कर अपनी फसल को फिर से सुरक्षित कर सकते हैं।

छैगांव माखन

भीलगांव से सुबह जनकारवां निकलकर खंडवा की तरफ आगे बढ़ा एवं खंडवा में पहला पड़ाव छेगांव माक्षन में था । छेगांव माखन इंदौर से खंडवा जाने वाले मार्ग पर स्थित एक बड़ा गांव है। इस गांव में जनकारवां का स्वागत वहां की स्थानीय संस्था स्पंदन, प्रसून एवं आदिवासी दलित मजदूर संगठन तथा आदिवासी दलित मोर्चा खंडवा ने किया। जनकारवां के स्वागत के साथ ही गांव में रैली का निकाली गयी जिसमें लगभग 150 लोग षामिल थे, रैली से पूरे गांव में जनकारवां एवं उसके उद्देष्यों के बारे में लागों में बहुत कौतूहल था तथा लोगों ने रोक, रोक कर उस संबंध में जानकारी मांगी तथा सही बात पता चलने पर रैली में शामिल होग गये। रैली के गांव में उत्साह जगाने के बाद गांव के मुख्य बाजार के मध्य भाग में स्थित मैदान में एक जनसभा का आयोजन किया गया।

इस सभा में जनकारवां एवं बीज स्वराज अभियान का परिचय देते हुए **निलेश देसाई** ने बताया कि पिछले 10 सालों में बाजार में एक अलग तरह का माहौल विकसित होता दिखाई देने लगा हैं एक चकाचौंध सी हैं यह सब पहले नहीं होता था। एक तरफ उंची बिल्डिंगों एवं बाजार में चमक दिखाई देती है तो दूसरी ओर किसान और मजदूर की हालत दिन व दिन बदतर होती जा ही है। नौकरी पेशा वर्ग भी परेशान दिख रहा है। 1994 में विश्व के व्यापारियों के एक वर्ग ने एक नियम बनाया जो अब हमारे बाजार को नष्ट कर रहा है। अब बाहर की कंपनियां स्कूल और अस्पताल भी खेलने के लिए आगे आ गयी हैं। यदि सब तरफ बाजार और व्यापार हाबी हो गया तो हमारी मदद कौन करेगा। गरीब और किसानों की मदद के लिए कौन आगे आयेगा। पिछले 57 सालों में तो हालत बेहतर होनी चाहिए थी लेकिन इसके बिपरीत हालत बिगड़ती जा रही है। अब इस हालत को ज्यादा दिन तक बढ़ते नहीं देखा जा सकता।

सभा में बोलते हुए आजादी बचाओ आंदोलन के **मनोज त्यागी** ने कहा कि हमारे देश के 8–10 करोड़ आदिवासी जिनके जीवन जीने का अपना तौर तरीका रहा है। उन्होंने अपने जीवन जीने का तरीका नहीं छोड़ा है। अमरीकी सरकार ने वहां के आदिवासी समाज को नष्ट कर दिया, यही काम अंग्रजों ने भारत में किया। हमारे जंगल, जमीन, नदियां, खदानें छीनने का काम यहां हुआ। अब इस काम को ज्यादा व्यवस्थित तरीके से करने का नाम है विश्व व्यापार संगठन। अब हर स्तर पर यह संगठन अपनी पांव

पसारना चाहत है। बड़ी कंपनियां जो इस संगठन की रीढ़ हैं, चाहती हैं कि पूरा बाजार अब उनके कब्जे में हो। यह हमारे सफायें की मुहिम चला रहे हैं। उनके लिए हम सब शिकार हैं, व्यापारी भी उनके निशाने पर हैं। व्यापारी भी उनके लिए आदिवासी हैं। अब हमें सोचना पड़ेगा कि हम इससे कैसे निपटें। हमें याद करने की जरूरत आ पड़ी है कि कैसे हमारें क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों को देश से भगाया था। अब फिर से जीवन मरण का प्रश्न आज हमारे सामने आ गया हैं। एक नयी लड़ाई तैयारी फिर से करनी पड़ेगी। इसके लिए कोई बना बनाया तरीका हमारे सामने नहीं है। सरकार भी हमारी मदद नहीं करने वाली। संसद में बहस नहीं होने वाली। सरकार ने तो विकास का पूरा ठेका ही कंपनियों को दे रही है। मूल समस्याओं का मुद्दा तो अब सरकार के सामने रहा ही नहीं। अब तो यह मामला जनसंसद में आ गया है। और जनसंसद में बहस भी शुरू है और लड़ाई भी छिड़ चुकी है। केरल, छत्तीसगढ़, कर्नाटक के कई उदाहरण हमारे सामने हैं जहां कंपनियों को भगा दिया गया है।

भारतीय किसान बनाम विदेशी किसान

सभा को संबोधित करते हुए **क्रांतिकारी संत श्री विनय सागरजी** ने विश्व व्यापार संगठन के तौर तरीकों को अपने देश के लिए गंभीर खतरा बताते हुए कहा कि वे झूठे प्रलोभन देकर, रिश्वत देकर हमारी जमीन को हड़प जाना चाहते हैं। आज विदेशी कंपनियां कहती हैं कि भारत के किसान खेती करना नहीं जानते, वे बहुत कम उत्पादन ले पा रहे हैं। हम उन्हें खेती करने का तरीका सिखायेंगे, उनका उत्पादन चौगुना करके दिखायेंगे। वह ऐसा बीज, कीटनाशक इस्तेमाल करेंगे जिससे फसल का उत्पादन बहुत बढ़ जायेगा और कीट का प्रकोप नही होगा। लेकिन बीज का कानून भी उनको चाहिए, भारत का किसान वही बीज बो सकेगा जिसका उसके पास लाइसेंस होगा, जिसे सरकार अनुमति देगी। सरकार ने बिदेशी कंपनियों को अनुमति दे दी है। मोनसेंटों कंपनी कपास का बीज बेचती है। वह दबाव डालते हैं कि सब्सिडी घटाओ, जिसका नतीजा यह होगा कि किसान को जो वस्तु बाजार से मिलेगी वह महंगी होगी। डीजल, खाद, कीटनाशक, बीज के भाव बढ़ेंगे और फसल के भाव घटेंगे। किसान जो कमायेगा, उसका भाव उसे नहीं मिलेगा, लेकिन बाजार में खरीदने जायेगा तो महंगाई से न बच सकेगा। हमेशा अत्याचार का सामना तो निर्बलों को ही करना पड़ता है। सारे घोटाले के बाद देश के जनप्रतिनिधि हमेशा मुक्त हो जाते हैं, पर यदि एक आम आदमी या एक चपरासी 100 रू कर रिश्वत में फंस जाये तो उसे सजा भुगतना पड़ती है। अब तो एक जंग का ऐलान करना ही होगा, अब लठ्ठ तो उठाना ही पड़ेगी। ऐसा जिस दिन कर लिया सब भाग जायेगे, कोई नहीं टिकेगा। बस हम सब तय कर ले कि बिदेशी माल नहीं खरीदेंगे। एक चिठ्ठी अपने देश के विदेशमंत्री को लिखेंगे कि यदि हमारे हितो के विपरीत कोई समझौता करोगे तो उसे केवल कागज का टुकड़ा मानेंगे।

खुडवा के वरिष्ठ साहित्यकार **गोपीनाथ गौर** ने जनकारवां के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सब को मिलकर इस कारवां को सहयोग करना चाहिए। हमें हमारे अधिकार और कर्तव्य के प्रति सचेत रहकर देश की सुरक्षा करना है। अंत में **सीमा जी** ने विनय सागर जी के द्वारा विदेश मंत्री को चिठ्ठी लिखने की बात को दोहराते हुए संकल्प लिया कि हम खंडवा में पोस्टकार्ड का अभियान चलायेगे।

छैगांव से जनकारवां आगे बढ़ते हुए नगरनिगम चौराहा खंडवा पहुंचा एवं वहां नूक्कड़ सभा को संबोधित करते **आचार्य विनय सागर** ने कहा कि आज हम जिस प्रजातांत्रिक देश में जी रहे हैं, उसकी प्रणाली नष्ट हो रही है। यहां विश्व व्यापार संगठन की प्रणाली चल रही है। हमारी रोज की जिंदगी से वास्ता रखने वाली मूलभूत जरूरतो पानी, बिजली, खेती, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर निजीकरण का भूत सवार हो रहा है। अपना पानी हमें खुद अब खरीदना पड़ेगा। किसान की जमीन खतरे में है। व्यापारियों का व्यापार बहुाराष्ट्रीय कंपनियों के शिकंजें में हैं। यह सब हमारी सरकार की जनविरोधी नीतियों के कारण हो रहा है। जब जनता के द्वारा चुनी सरकार ही जनविरोधी नीतियों को मदद करने लगे तो कोई रास्ता नहीं बचता। एक सीधी लड़ाई लड़नी पड़ती है। हम इस कारवां के माध्यम से यही संदेश फैलाने के लिए प्रदेश के कोने कोने में जा रहे है कि जनविरोधी नीतियों का हम बहिष्कार करें एवं सरकार को आगाह करें कि वह ऐसा कोई कदम न उठाये जिससे जनता का हित खतरे में पड़ जाये।

इस नुक्कड़ सभा में जनकारवां के अगुआ **श्री निलेश देसाई** एवं आजादी बचाओ आंदोलन के **मनोज त्यागी** ने भी अपने विचार रखे।

इस नुक्कड़ सभा के बाद नगरनिगम चौराहे से रैली निकलकर बसस्टैंड के पास जागर समाप्त हो गयी। रैली में विश्व व्यापार संगठन के जनविरोधी तौर तरीकों को रोल प्ले एवं चित्रों एवं बैनर तथा पेस्टरों के माध्यम से लोगों के बीच रखा गया। रैली में राजस्थानी कलाकारों का वाद्यांतर आकर्षण रहा वहीं

जनकारवां के रथ को लोग उत्सुकता से देख रहे थे। लोग इस कारवां एवं विश्व व्यापार संगठन के जनविरोधी कारनामें से अनभिज्ञ थे। व्यापारी, दुकानदार, आमजन इस कारवों के उद्देश्यों से अवगत होना चाह रहे थे। कई लोगों ने जहां परचे पढ़कर जाना वहीं कई लोगों ने कारवां में शामिल लोगों को रोककर पूछा।

सिमरोल

बस स्टैंड खंडवा से जनकारवां इंदौर के लिए निकल पड़ा एवं इंदौर में पहला पड़ाव कारवां का सिमरोल में था। सिमरोल पहुंचते ही वहां की स्थानीय संस्था वास्प एवं जनचेतना मंच सिमरोल के कार्यकर्ताओं ने जनकारवां का स्वागत फूलमाला से किया। ए.बी.रोड सिमरोल से रात को रैलीनिकाली गयी जो गांव के मुख्य मार्ग से होकर बाजार चौक पर जाकर समाप्त हुई। गांव में रात के समय रैली के आयोजन सें गांव के लोगों में कौतूहल देखा गया एवं लोग अपने घरों से निकलकर रैली का नजारा देख रहे थे। रैली के साथ मिलकर सब बाजार चौक तक पहुंचे जहां एक सभा का आयोजन किया गया।

सिमरोल में हुआ जनकारवां सभा का आयोजन

जनकारवां का परिचय एवं मध्यप्रदेश में निकली इस यात्रा के उद्देश्यों का बताते हुए वास्प संस्था के **मनोहरलाल राठौर** ने बताया कि विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों एवं उसके असर को जनता के सामने रखने के लिए यह कारवां निकला है। आपने कहा कि आज आमदनी बढ़ने के बावजूद आम लोगों की स्थिति दयनीय होती जा रही हैं। गरीब लोगों की कमाई पूंजीपतियों के हाथ में जा रही हैं। विश्व बैंक जो हमें कर्ज देता है, अपने कर्ज के वापसी के लिए दबाव बनाता है और आम लोगों के लिए जो सरकार सब्सिडी देती है उसे बंद करने का दबाव सरकार पर बनाता हैं इसका असर यह हो रहा कि महंगाई बढ़ती जा रही है और युवकों बेरोजगार भटकना पड़ रहा हैं जल, जंगल, जमीन जैसे महत्वपूर्ण साधनों पर अब कंपनियों की नजर हैं वह हमारे साधनों के शोषण के लिए तरह तरह के चालें चल रहे हैं। इन्हीं सब शोषक नीतियों को जनता के सामने रखने के लिए यह कारवां निकला है।

इस सभा में **कैलाशजी** जनपद सदस्य ने कहा कि कृषि को चौपट करने के लिए एक समझौता पिछली सरकार ने किया था डंकल प्रस्ताव पर। किसानों ने इसका विरोध किया था। आज फिर से चीन में इसे दोहराया जा रहा है। विकसित देश जो अपने किसानों का भारी सब्सिडी देते हैं, वह हमारे किसानो के लिए सब्सिडी खत्म करे के लिए सरकार पर दबाव बनाते हैं। हमें इन बाहरी ताकतों से बचना हैं।

जीवनशक्ति पर संकट

आजादी बचाओं आंदोलन के **मनोज त्यागी** ने कहा कि साल किया कि इंदौर जिले का देश भर में तो नाम है लेकिन यहां कितने लोग संतुलित भोजन पाते हैं? यह हालत क्यों कि बुनियादी जरूरते भी नहीं पूरी हो पा रही हैं। आपने बताया कि पिछले 15–20 सालों में हम जो भूमंडलीकरण में शामिल हो गये है, यह उसी का नतीजा है। अब यदि विश्व व्यापार संगठन के साथ शामिल हुए तो आमजन महामारी, भूख आपदा आदि से ग्रस्त होने वाले हैं। हमारी जीवनशक्ति विश्व व्यापार संगठन के हाथों छिन जायेगी। पंचततव का हमारे देश में बहुत नाम लिया जाता है, क्योंकि यह तत्व जीवन के आधार हैं। और अब इन ततवों जल, वायु, आकाश, पृथ्वी और अग्नि पर भी संकट खड़ा हो गया है। अब विश्व व्यापार संगठन ने इन चीजों को वयापार में शामिल कर लिया है। पानी का व्यापार हो रहा है। जमीन से विस्थपित किया जा रहा है व्यापार करने के लिए। किसान आत्महत्या के लिए मजबूर हो रहे हैं। स्वास्थ्य का पैमान अब लाइफबाय हो गया हैं अब गुलामी के लिए फौज नहीं लगती, क्योंकि हम जो लोकतांत्रिक देश में रह रहे है। अब वे विचार ही बदल देना चाहते हैं। हमारे देश के प्रतिनिधि तो जैसे देश के प्रतिनिधि ही नहीं हैं। उनके लिये यह मुद्दा ही नहीं है। अब जब ऐसी स्थिति है तो यह मुद्दा जनता की संसद में ही हल करना होगा।

सभा में अपनी बात रखते हुए लोक जागृति मंच झाबुआ के **लक्ष्मणजी** ने कहा कि बाहरी कंपनियां हमारी फसलों को अपना निशाना बना रही हैं। वह भ्रमित करके मुनाफा कमाना चाहती हैं। निमाड़ में बीटी काटन के बीजों को बेचने के लिए किसना के बीच भ्रम फैलाया गया कि इसमें अधिक उत्पादन मिलेगा। लेकिन सर्वेक्षण यह बताते हैं कि उनका यह प्रचार गलत साबित हुआ है। पर श्री लक्ष्मण के इस सवाल पर कि कितने लोग विदेशी बीजों का बहिष्कार करेंगे, लोग चुप थे।

हिंसा की ज्वाला में जलता भारत

सिमरोल में सभा को संबोधित करते हुए आचार्य **विनयसागर** ने कहा कि आज हिंसा की ज्वाला में जलता हुआ भारत सबके सामने है। किसान आत्म हत्या करने के लिए विवश हैं। बीज का पेटेंट हो रहा है। बना किसी से पूछे किसानों के अहित में कानून बन रहा है। हमारे देश में दूध नहीं बिकता था लेकिन पानी 12 रू लीटर बिक रहा हैं। अंग्रेजों की लूट के बाद अब इस देश में जल जंगल और जमीन की लूट की रण्नीति बन रही है। हमारे देश के 80 प्रतिशत लोग जल, जंगल, जमीन से ही अपनी आजीविका चलाते हैं। जो अधिकार की बात करे उसे मारो पीटो, जेल में डाल देने वाली नीति बन रही है। आगामी चीन सम्मेलन में इन्हीं सब बातों को ढांचागत रूप देने की तैयारी हो रही है। आज किसानों के देश भारत में गेहूं 7 रू किलो एवं डीजल 37 रू लीटर बिक रहा है। जिनको सत्ता दे दी, वे विरोधी कानून बना रहे है। वनमंत्री 14 शेर मारे तो वह अपराध नहीं है लेकिन टाइगर प्रोजेक्ट के नाम पर आदिवासियों का बाहर कर रहे हैं। अब शासक वर्ग पर तो भरोसा नहीं है, वह तो कठपुतली बन गया है। अब देश में मरने के लिए सैनिक, माला के लिए नेता हैं। अब हम कसम लेंगे कि इस जनविरोधी नीति एवं उसको समर्थन करने वालों को सबक सिखा देंगे।

इंदौर

मालवा की धरती पर भूमंडलीकरण विरोधी सम्मेलन

हांगकांग सम्मेलन में जन जन की बात पहुंचाने के लिए वैश्वीकरण के विरूद्व सम्मेलन-

1 दिसम्बर 2005, आयोजक – मध्यांचल फोरम मध्यप्रदेश

1 दिसम्बर को निमाड़ एवं मालवा के विभिन्न अंचलों से गुजरता हुआ जनकारवां मध्यप्रदेश की औद्योगिक राजधानी इंदौर में दाखिल हुआ एक संदेश लेकर, एक उत्साह लेकर, एक जनचेतना एवं आमजन की आवाज लेकर। नगर निगम प्रांगड़ में स्थित जयहिंद भवन में आयोजित सम्मेलन में मालवा एवं निमाड़ के किसान, जनसंगठन एवं संस्थाओं के कायकर्ता एवं कई गणमान्य सहित लगभग 300 लोग उपस्थित थे।

पेटलावद से आये साथियों के भवई नृत्य एवं राजस्थान तथा वास्प टीम के स्वागत गीत के साथ सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। **मनोहरलाल यादव** ने मंच पर अतिथियों का स्वागत किया एवं तपन भट्टाचार्य द्वारा इस सम्मेलन का आयोजन कर रहे मध्यांचल फोरम का परिचय कराया गया। आपने बताया कि मध्यांचल फोरम 18 संस्थाओं का मंच है जो स्थानीय मुद्दों के साथ ही जल, जंगल एवं जमीन के मुद्दों पर काम करता हैं। आदिवासी एवं किसानों के मुद्दों को पहचानना एवं उसके लिए रणनीति बनाना इस फोरम का मुख्य काम है। पिछले कुछ सालों से एकजुटता के साथ मिलकर यह मंच काम कर रहा है और कई महत्वपूर्ण कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किये हैं।

अपने स्वागत भाषण के दौरान मनोहरलाल यादव ने कहा कि इस आयोजन का खास मकसद है चीन में होने जा रहे विश्व व्यापार संगठन सम्मेलन में भारत की तरफ से भी समझौते पर हस्ताक्षर हाने वाले है। हमारे जनप्रतिनिधि एवं आमजन को इसकी पूरी जानकारी नहीं है कि वहां क्या होने वाला है। इस समझौते में शामिल होने से हमारे देश में खेती की लागत बढ़ेगी एवं कई ऐसे बदलाव होंगे जिससे

जल, जंगल और जमीन जैसे साधनों का निजीकरण बढ़ेगा। इस पूरे जनविरोधी नीति बनाने वाले सम्मेलन के खिलाफ जनकारवां मध्यप्रदेश में निकला है।

खेती एक जुआ है!

फसल अच्छी तो मुसीबत, न हुई तो मुसीबत

बयोबृद्व नेता **होमीदाजी** ने अपने उदबोधन में कहा कि आज हमारे देश में खेती एक जुआ की तरह है। गांव खुशहाल तो देश आगे बढ़ेगा, पर किसान की हालत तो बदतर हो रही है। फसल अच्छी नहीं हुई तो मुसीबत, फसल अच्छी हो गयी तो भी भाव न मिलने के कारण मुशीबत, तो किसान तो हर तरह से परेशान है। किसान दुयी है बर्बाद है, आत्महत्या कर रहा है। व्यापारी के लिए बीमा है, पर किसान के लिए क्या है। सबको मिलकर ताकत बनानी होगी एवं इस विरोधी नीति को कमजोर करना होगा।

किसान की फसल के भाव बढ़ने पर हंगामा क्यों?

इंटक इंदौर के श्यामसुंदर यादव ने इंटक की ओर से इस कारवां का समर्थन करते हुए बताया कि हमारे देश के किसानों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगिता करना पड़ेगी। अब दुनिया के हर उत्पाद को कहीं भी बेचने के लिए छूट होगी। दुनिया के विकसित देशो में उत्पादों पर भारी सब्सिडी है, ऐसे में हमारे उत्पाद यदि प्रतियोगिता नहीं कर पाये तो वे बेकार होगे, देश के नौजवान बेरोजगार होंगे।

बीज का व्यापार

बीज स्वराज अभियान एवं निमाड़ एवं मालवा से जनकारवां की अगुवाई कर रहे सम्पर्क के साथी निलेश देसाई ने सम्मेलन में कहा कि 1985 में एक समझौता हुआ था और 1994 में डंकल प्रस्ताव भारत आया। इस प्रस्ताव में उत्पाद के साथ ही सेवा एवं कृषि क्षेत्र को भी व्यापार में शामिल कर लिया गया था। साथ ही विश्वबैंक के द्वारा कर्ज भरने पर दबाव भी बनाया जाने लगा। भारत शुरू से ही ऐसी नीति का विरोध करता रहा है लेकिन 1994 में समझौते पर हस्ताक्षर कर दिया। यह समझौता जनवरी 05 से लागू होना था। अमेरिका ने विश्व व्यापार संगठन का सदस्य बनने के पूर्व अपनी संसद में एक प्रस्ताव पारित किया था कि किसी तरह की दिक्कत पैदा होने पर हमारी नीति उच्च होगी। पर भारत ने सदस्यता लेने के पूर्व अपनी संसद में कोई प्रस्ताव इस विषय पर नहीं रखा। कृषि के क्षेत्र में 56 शर्तें लगा दी गयीं। अब सरकार समर्थन मूल्य नहीं तय कर सकती, यह काम अंतर्राष्ट्रीय बाजार करेगा। सरकार द्वारा दी जा रही सब्सिडी में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कटौती की जा रही है। विकसित देशों में 350 प्रतिशत तक सब्सिडी बरकरार है। वहां खेती न करने के लिए भी सब्सिडी दी जाती है। बीज का व्यापार बढ़ रहा है, बीज अब किसान को बाजार से ही लेना पड़ेगा। ऐसी हालत में किसान कैसे जिंदा रह सकता हैं। ई चौपाल के माध्यम से फसल का भाव बढ़ाकर किसानों का लालच देकर फंसाया जा रहा हैं। अब खाद्य सुरक्षा एवं आजीविका पर गंभीर संकट पैदा हो गया हैं। मालवा क्षेत्र में बौद्विक अधिकार के तहत बीटी काटन बाजार में लाया गया एवं बढ़चढ़कर उसके फायदे गिनाये गये, करोड़ों के बीज का व्यापार हुआ। पर अध्ययन दर्शाते हैं कि यह पूरी तरह असफल साबित हुआ है। बीटी काटन के जो उत्पादन के आंकड़े बताये गये थे, उतना उत्पादन कहीं नहीं पाया गया। कई किसानों की फसल भी खराब हो गयी और उन्हें न्यायालय की शरण में जाना पड़ा।

दुनिया के पटेलों की चाहत

सम्मेलन में आजादी बचाओ आंदोलन के साथी **मनोज त्यागी** ने भूमंडलीकरण की व्याख्या करते हुए बताया कि दुनिया के 3–4 सौ पूंजीवादी लोग चाहते हें कि पूरी दुनिया में व्यापार करने एवं मुनाफा कमाने के लिए कोइ्र वकालत न हो, उन्हें छूट हो कि वे पूरी दुनिया में कही भी पूंजी लगा सकें एवं मुनाफे को जहां चाहें ले जा सकें। इन लोगों ने आपस में मिलकर एक समझौता कर लिया है और विभिन्न सरकारों ने इसे मान्यता दे दी है, यही विश्व व्यापार संगठन है। इससे दुनिया के 15 प्रतिशत या इससे कम लोग विश्व के 85 प्रतिशत संसाधन का उपयोग कर सकते हैं। वे अपनी जीवनशैली को बढ़ाने के लिए इसे और बझाना चाहते है। इसी जनविरोधी नीति को रोकने के लिए हम सब जनता को सरकार को आगाह कर रहे हैं। सरकार तो जिम्मेदारी छोड़ चुकी है, अब जनता को ही फैसला करना होगा। हम सम्पूर्णता को नकारते हैं, इस विरोधी और गैरबराबरी वाली नीति में हमें नहीं शामिल होना।

दूर देश के फैसले

सभा में बालते हुए सुश्री **जया मेहता** ने सवाल उठाया कि दूर देश में जाकर जो फैसले होते हैं, जो वहां जाकर हमारे भविष्य की नीति तय हो रही है। यह जो दूरी है, उससे हम कैसे निपटेंगे, साइन तो हमारे नेता जाकर वहां कर आयेगें। हमारी सरकार तो पूंजीवादियों के लिए काम कर रही है, पार्टियां अपने फायदे के लिए काम कर रही है। हमें अपनी क्षमता को पहचान करके जोरदार माहौल पैदा करना होगा एवं अपने प्रतिनिधियों को दबाव में लेना होगा।

वो हस्ताक्षर करेंगे, हम हस्तक्षेप करेंगे

उक्त बात क्रांतिकारी संत विनय सागर ने जयहिंद भवन में हो रहे भूमंडलीकरण विरोधी सम्मेलन के दौरान कही। आपने कहा कि आज जो लड़ाई हम सबको लड़नी पड़ रही है, वह विकास की गलत नीति के कारण लड़नी पड़ रही है। विकास होता रहा, कर्ज बढ़ता रहा। सरकारें बदलने से भी कुछ फायदा नहीं हुआ। अब जो कर्ज हमने विकास के लिए लिया उसकी अदायगी का दबाव भी हमें भुगतना पड़ रहा है। उस दबाव में वे हमारे उपर जनविरोधी नीतियों को भी मनवाने लगे हैं। वह अपने मुनाफे के लिए कुछ भी करने के लिए तेयार हैं। पानी का व्यापार वे करना चाहते हैं, वे व्यापार तो यहां करना चाहते हैं, पर कानून यहां का नहीं मानेंगे। पेप्सी में कीटाणु पाये जाने पर हमारे वैज्ञानिकों की रिपोर्ट को गलत करार देते हैं। जब आमजन इनका विरोध करते हैं तो सरकार उसे हिंसा करार देती है। हमारे प्रश्नों के जवाब

सरकार के पास नहीं है। जल, जंगल, जमीन किसी के नहीं हैं, हम अब उस पर किसी को कब्जा नहीं करने देंगे। सरकार कुछ भी कर ले। वह कहीं भी हस्ताक्षर करके आ जाये, हम उसे नहीं मानेंगे। वह हस्ताक्षर करेंगे, हम हस्तक्षेप करेंगे।

आर्थिक गुलामी से बचना है

बसंत शिंदे ने सम्मेलन में अपनी बात रखते हुए कहा कि व्यापार समझौते के नाम पर यह सीधी लूट का रास्ता चाहते हैं। आजादी के पहले भी यही लूट थी और आंदोलन हुआ। अब लूट का तरीका बदल रहा है क्योंकि पहले जैसा तरीका अब कारगर नहीं होगा। विश्व व्यापार संगठन इसी तरीके का नाम है। खुला व्यापार तो सुनने में बहुत अच्छा लगता है, पर यह आसान नहीं है। हमारे यहां खेती आजीविका है, व्यापार नहीं है, दूसरे मुल्कों में यह व्यापार का क्षेत्र हो सकता है। खुले व्यापार के बहाने वह हारे अर्थव्यवस्था को कमजोर करना चाहते हैं। यह पूरी दुनिया की लड़ाई है जिससे साम्राज्यवाद को खत्म किया जा सके और आर्थिक गुलामी से देश को बचाया जा सके।

आजादी बनाये रखने के लिए लड़ाई लड़नी होगी

सम्मेलन के अंत में **विनीत तिवारी** ने अपने विचार रखते हुए सवाल रखा कि क्या पहले का भारत बहु अच्छा था, क्या पहले भूख से मौतें नही हुई हैं। दूध दही के देश में क्या सबको दूध नसीब था। क्या सबको सम्मान मिला। हमें इतिहास को सही नजरिये से देखना होगा और आज की लड़ाई आजादी को बचाने के लिए लड़नी होगी। आज तकनीक की मदद से बहुत कुछ हो रहा है, इस लड़ाई को भी तकनीक से जोड़कर देखना चाहिए। स्थानीय लड़ाई को सरकार द्वारा कुचलना आसान होता है, हस्तक्षेप ज्यादा ताकतवर होना चाहिए।

सम्मेलन का संचालन तपन भट्टाचार्य ने किया एवं आभार भारतीय विद्या प्रचारिणी सभा के डा. नायडू ने माना। सम्मेलन में जहां वक्ताओं ने अपने विचार रखकर उपस्थित लोगों को प्रोत्साहित किया वहीं गीतों एवं लघु नाटकों ने अपनी ओर लोगों का ध्यान खींचा।

जयहिंद भवन से रैली का आयोजन

सम्मेलन के समापन के बाद जयहिंद भवन से रैली निकाली गयी जो कमिशनर कार्यालय पर जाकर समाप्त हुई। इस रैली में मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र से आये जनसंगठन एवं संस्था कार्यकर्ता तथा किसान शामिल हुए। रैली भव्य स्वरूप में थी और लगभग 300 से 400 लोगों के भूमंडल विरोधी नारों एवं से प्रदर्शन से नगर के लोग उत्सुकता से देख रहे थे। रैली में जहां विश्वव्यापार संगठन एवं भारत के रिश्तो को उभारा गया था, वहीं विश्व व्यापार संगठन की जनविरोधी नीतियों को उजागर करने के लिए विभिन्न

रूपों में प्रदर्शित किया गया था। रैली में पोस्टरों बैनरों के माध्यम से जनविरोधी नीतियों के खिलाफ आहवान किया गया था।

कमिशनर कार्यालय पर प्रदर्शन एवं ज्ञापन

कमिशनर कार्यालय पर पहुंचकर रैली समाप्त हुई जहां उपायुक्त को प्रधानमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा गया जिसमें सरकार को विश्व व्यापार संगठन द्वारा चीन में किये जा रहे सम्मेलन में भारत की ओर से जनविरोधी नीतियों पर किसी तरह का समझौता न करने की बात रखी गयी थी।

भोपाल सम्मेलन
शाहजहानी पार्क, भोपाल

दिनांक 2.12.2005 को जनकारवां अपने अंतिम पड़ाव भोपाल में आ पहुंचा था। प्रदेश के विभिन्न अंचलों से जनकारवां में शामिल लोग जमा हुए थे। सबके पास अपने क्षेत्र के अनुभव थे। आज भोपाल गैस त्रासदी की वर्षी का भी दिन था, भोपाल गैस पीड़ित क्षेत्र की महिलाएं इस सम्मेलन में शामिल थीं। सम्मेलन स्थल पर लगे पोस्टर एवं बैनर तथा नारे जहां एक बार फिर से भोपाल गैस त्रासदी की याद दिला रहे थे, वहीं भूमंडलीकरण विरोधी जनकारवां रथ एवं जनकारवां में शामिल कलाकारों की धूम भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी। राजस्थानी कलाकारों के शंखनाद एवं स्वागत गीत के साथ सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ।

किसानों से ज्यादा ब्याज की वसूली

अपने प्रारम्भिक उदबोधन में सिवनी से आये सोपान संस्था के **अविनाश झाड़े** ने किसानों की स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि आज किसान हर क्षेत्र में बैंक, साहूकार, समितियों के कर्जदार हैं और बैंको द्वारा किसानों से वसूले जा रहे ब्याज में शहरी क्षेत्रों की तुलना में बहुत अंतर है। किसानों से ज्यादा ब्याज वसूला जा रहा है। इसका नतीजा यह हो रहा है कि किसान को अपनी जमीन गिरवी रखना पड़ रही है। स्व सहायता समूहों द्वारा जमा की जा रही जमा राशि पर 4 प्रतिशत ब्याज बैंक देता है जबकि उनके लिए दिये जाने वाले ऋण पर बैंक 12 प्रतिशत तक ब्याज वसूलता है। शहरी क्षेत्रों में कर एवं आवास ऋण के लिए 7–8 प्रतिशत ब्याज ही वसूला जाता है। इस तरह पूरी बाजार व्यवस्था को चौपट करने वाली नीति को बढ़ावा दिया जा रहा है।

हम जल्दी जीतेंगे

देश में पानी के अधिकार की लड़ाई लड़ने वाले राजस्थान से आये जलयोद्वा **श्री राजेन्द्र सिंह** ने सम्मेलन में अपनी बात रखते हुए कहा कि ऐसा लग रहा है कि हम अपनी लड़ाई जल्दी ही जीतेंगे। आपने याद दिलाया कि मोरक्को में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंहराव ने बिदेशी ताकतों की खिलाफत की थी और हस्ताक्षर नहीं किया था। आज ऐसी स्थिति नहीं है, 2003 में क्योटो सम्मेलन में जल संसाधन मंत्री पानी के लिए पूरे निवेश की तैयारी करके गये थे। अब बुरी स्थिति आने वाली है। पानी लूटने वाले विभाग बन गये हैं, अब लूट करने वाला को विकास करने वाले के नाम से जाना जाता है। आज गांधी होते तो इस लूट को हर गांव में पानी की लड़ाई में तब्दील कर देते। किसानों के पानी के मालिकाना हक के लिए लड़ाई लड़ते। पर ऐसा लग रहा है कि अब सरकार पर कोई दबाव ही नहीं रहा। सरकार एवं ब्यूरोक्रेट बिक गये हैं। पानी, खेत के निजीकरण वाले कानूनों के विरोध में अब मैदान में आने की जरूरत है।

लोक जागृति मंच, झाबुआ के **भाई शम्भू** ने गरीब के हित की लड़ाई लड़ने का संकल्प लेते हुए मालवा एवं मिाड़ के किसानों को जगाने वाले चेतना गीत को प्रस्तुत किया। लक्ष्मण भाई जो लोक जागृति मंच से ही आये थे, ने जोर देते हुए कहा कि हम असहयोग हीं कर रहे केवल बातों से काम नहीं चलेगा। हम बात बहुत करेंगे लेकिन पेप्सी की बोतल नहीं छोड़ेगे। अपने क्षेत्र के अनुभवों को बताते हुए आपने बताया कि झाबुआ के किसानों ने बीटी काटन के दुष्परिणामों को समझा और इसका पूरा विरोध एवं बहिष्कार

किया। बाहरी कंपनियों ने जो बीटी काटन का प्रचार प्रसार करके करोड़ों का बीज व्यापार कर रही हैं। हमारे किसानों ने उन्हें चुनौती दी है।

कृषि पर कोई समझौता नहीं

भारतीय किसान यूनियन उ.प्र. से आये **राकेश टिकैत** ने कहा कि आज गांव एवं शहर दोनों तरफ बुरी स्थिति है। गांव के किसान लोग गांव छोड़कर शहर की ओर आ रहे हैं। गांव में सुविधाएं बढ़ें तो पलायन को नियंत्रित किया जा सकता है। चीन में समझौता होने रहा है, उसमें क्या बाते शामिल की जा रही हैं, सरकार हमें बताये। हमारे किसान हमेशा से 20 प्रतिशत बीज सुरक्षित रखते आये हैं, अब इस समझौते से हमारे बीज पर भी खतरा आ रहा है। दुनिया के दूसरे देशों मे भारी सब्सिडी सरकार किसानों को देती है। 1 गाय रखने पर 35000 तक की सब्सिडी है, हमारे देश में जीवन भर में गाय 35000 का दूध नहीं दे सकती। ऐसी स्थिति में हमारे किसान कैसे मुकाबला कर सकते हैं। हमारी मांग है कि हमारे देश में कृषि पर कोई समझौता नहीं होना चाहिए।

करो या मरो की लड़ाई दोहराने की जरूरत

आदिवासी हक के लिए लड़ाई लड़ने वाले **विजय पांडा** ने कहा कि विकास की गलत नीतियों के चलते आज हम यहां तक पहुंच गये हैं कि पानी, जंगल, भूमि पर हमारा हक छनता जा रहा है। आगामी विश्व व्यापार संगठन समझौते में यही मुद्दा हैं कि हमारे संसाधनों पर बाहरी कंपनियां कैसे कब्जा जमा सकें। यह अर्थनीति बदलने की लड़ाई है, बुनियादी हक की लड़ाई है। दिल्ली में पानी के सुधार के नाम पर जो समझौता हुआ है, उसके गम्भीर परिणाम सामने आये हैं। आम लोगों को पानी महंगे दामों पर खरीदना पड़ रहा है। आदिवासियों को संरक्षित वन घोषित करके बाहर भगाया जा रहा है। 40 लाख आदिवासी संरक्षित वन में निवास कर रहे हैं, उनके लिए कोई वयस्था किये बगैर संरक्षित वन क्षेत्र घोषित करना बेमानी है। इन जनविरोधी नीतियों के खिलाफ अब एकजुट होकर करो या मरो की लड़ाई लड़ानी पड़ेगी। अब संसद एवं विधान सभाओं को घेरना पड़ेगा।

खुली छूट का नतीजा खतरनाक

मध्यप्रदेश में मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में बीज स्वराज अभियान पर निकले निलेश देसाई ने अपने अनुभवों का बताते हुए कहा कि हम खुली छूट का नतीजा 21 वर्ष पहले भोपाल में देख चुके हैं। इस खतरनाक परिणाम से हम अभी तक नहीं उबर पाये हैं, अभी भी उसकी लड़ाई हमें लड़नी पड़ रही है। जनकारवां के साथ हमने 10 जिलों में पाया कि स्थानीय लोगों को इन बदलावकारी नीतियों के बारे में कुछ पता नही है। हां वे बाजार में हो रहें बदलावों एवं उसके असर से वाकिफ हैं। उन्हें यह नहीं पता है कि उनके बीजों के साथ किस तरह की नीति बनने वाली है। उनकी जमीन के साथ क्या होने वाला है, पानी एवं जंगल पर किस तरह के अधिकार की बात चल रही है। उहें यह भी पता नहीं है कि बीटी काटन जैसी प्रजातियां जिसे बहुत लाभदायी फसल के रूप में प्रचारित किया जा रहा है, क्यों अलाभकर एवं हानिकारक हो रही हैं। इस पूरे अभियान में व्यापारी, छात्र, किसान सभी ने हिस्सा लिया एवं अभियान को आगे बढ़ाने के लिए अपना समर्थन एवं सहयोग दिया।

विंध्यांचल से जनकारवा के साथी **ध्रुव परिहार** ने अपने अनुभवों को सामने रखते हुए बताया कि विंध्य क्षेत्र में लोगों ने बनियादी सुविधाओं की बात उठायी। लोगों ने स्कूल, अस्पताल की बात रखी। लोगों ने बुनियादी सुविधाओं के सुधार की लड़ाई लड़ने के लिए सहयोग एवं संघर्ष की बात रखी।

उधमसिंह बनने का संकल्प

जनकारवां के साथ मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में चेतना की लहर फैलाकर भोपाल पहुंचे क्रांतिकारी संत श्री **विनयसागर जी** ने सम्मेलन में दो टूक शब्दों में कहा कि अब तो सब रास्ते खत्म होते नजर आ रहे हैं। जिस देश में सरकार सुन्न पड़ जाती है, उस देश की जनता भी सुन्न पड़ जाती है। हम जितना बहिष्कार करते हैं, वह उतना आविष्कार करते हैं। अब तो एक फतवा ही जारी करना पड़ेगा, उधमसिंह बनने का फतवा। अब मैं उधमसिंह बनने का संकल्प लूंगा।

भोपाल प्रस्ताव

सम्मेलन में बोलते हुए मुलताई के बिधायक **डॉ. सुनीलम्** ने जनकारवां की तरफ से एक प्रस्ताव रखा कि–

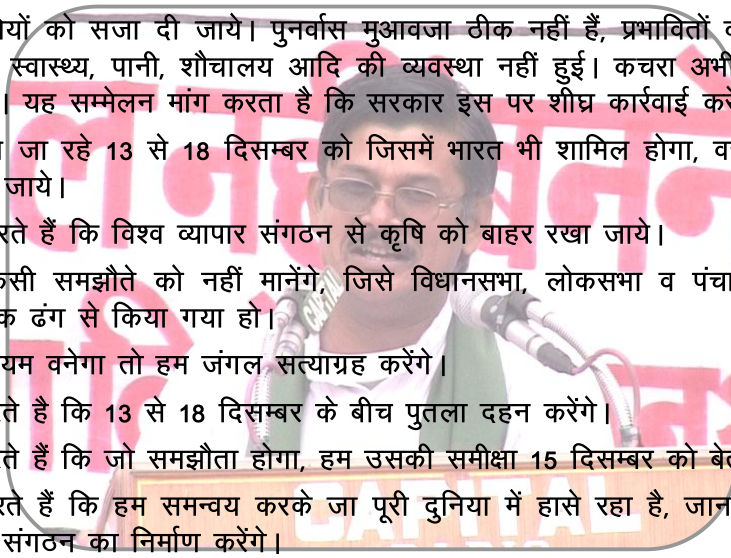

- **भोपाल दोषियों को सजा दी जाये। पुनर्वास मुआवजा ठीक नहीं हैं, प्रभावितों को आजीवन पेंशन नहीं मिली। स्वास्थ्य, पानी, शौचालय आदि की व्यवस्था नहीं हुई। कचरा अभी तक नहीं हटाया जा सका है। यह सम्मेलन मांग करता है कि सरकार इस पर शीघ्र कार्रवाई करे।**
- **चीन में होने जा रहे 13 से 18 दिसम्बर को जिसमें भारत भी शामिल होगा, वहां जो फैसला हो, उसे बताया जाये।**
- **हम मांग करते हैं कि विश्व व्यापार संगठन से कृषि को बाहर रखा जाये।**
- **हम ऐसे किसी समझौते को नहीं मानेंगे, जिसे विधानसभा, लोकसभा व पंचायत से पूछे बगैर अलोकतांत्रिक ढंग से किया गया हो।**
- **यदि वन नियम वनेगा तो हम जंगल सत्याग्रह करेंगे।**
- **हम तय करते है कि 13 से 18 दिसम्बर के बीच पुतला दहन करेंगे।**
- **हम तय करते हैं कि जो समझौता होगा, हम उसकी समीक्षा 15 दिसम्बर को बेतूल में करेंगे।**
- **हम तय करते हैं कि हम समन्वय करके जा पूरी दुनिया में हासे रहा है, जानकारी देने के लिए एक स्थायी संगठन का निर्माण करेंगे।**
- **सम्मेलन की ओर से प्रस्ताव है कि हम बोतलबंद पानी, कोक, पेप्सी नहीं पियेंगे। मोनसेंटो, कारगिल के बीज नहीं बोयेंगे।**
- **बीटी काटन का विरोध करेगे।**
- **यूनियन कार्बाइड का उत्पाद नहीं खरीदेंगे।**
- **हम मांग करते हैं कि जो आदिवासियों के लिए बिल बन रहा है, उसमें आज तक जो जिस भूमि पर काबिज है, उसे उसका हक मिले।**
- **शहर के अंदर रह रहे गरीब परिवारो को जाहं वे रह रहे हैं भमि का स्थयी पट्टा दिया जाये।**
- **दूध एवं दूध से बने उत्पाद का पूरा दाम नहीं मिल रहा है, यदि पानी का रेट 15 है तो दूध रेट 15 से अधिक होना चाहिए।**

सम्मेलन में मंच का संचालन कर रहे म.प्र. जन अधिकार मंच के **उमेश वशिष्ठ** ने अंत में अपनी बात रखते हुए कहा कि हमें मजबूती के साथ भोपाल प्रस्ताव को लागू करने के लिए काम करना होगा। हम अशांति नहीं चाहते लेकिन निरंकुश शासन को खत्म करना हमारा कर्तव्य है।

भोपाल में मशाल रैली

जनकारवां के अंतिम दिन भोपाल सम्मेलन भोपाल प्रस्ताव की घोषणा के बाद शाहजहानी पार्क से शाम को मशाल रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में मध्यप्रदेश जनकारवां के विभिन्न अंचलों से आये साथी तथा भोपाल गैस पीड़ित महिला संगठन की महिलाएं एवं हजारों की संख्या में आम लोगों ने हिसा

लिया। यह मशाल रैली भोपाल गैस त्रासदी से पीड़ित लोगों के सुविधाओं को पाने एवं भूमंडलविरोधी नीतियों की खिलाफत करने के आहवान के साथ खत्म हुई।

भूली बिसरी

सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों से आये कलाकारों ने बीच बीच में अपन कला का प्रदर्शन कर उपस्थित समह का ध्यान खींचा। रीतू बहन ने अपनी उर्जादायक कविताओं के एवं पंक्तियों के माध्यम से लोगों का उत्साह बढ़ाया।

गीतों के अंश

-- १ --
यह कैसा अंधकार है , हां है
यह स्वार्थी बाजार है, हां है
स्वार्थी बाजार में क्या जीने का अधिकार , न न न न न
कैसा अंधकार है, हां है
बड़ा है रूपइया आज के जमाने में,
हो रही मिलावट देखो पीने और खाने में
जाने अनजाने में वेशक दवाखाने में
व्याकुल हर इंसान है, हां है
स्वार्थी बाजार में क्या जीने का अधिकार है, न न न न न
कैसा अंधकार है, हां है
जिसकी लाठी, भैंस उसकी

कैसी जुलमा जोरी है
दलबदलू तो बेसक हैं, पर बड़ा है उन्हीं का नाम
यहां वहां जहां तहां, दौडे खूब सुबह शाम
गंगा गये गंगाराम, यमुना गये यमुनाराम,
इन्हें कुर्सी से प्यार है, हां है
स्वार्थी बाजार में क्या जीने का अधिकार है, न न न न न
कैसा अंधकार है, हां है
आजादी तो आयी लेकिन, नकली नकालों की
ठेकेदार, जमादार या फिर पैसे वालों की
इन बिचौलियों, दलालों की, टेढ़ी टोपी वालों की
भंवर भी खुद लाचार है, हां है
स्वार्थी बाजार में क्या जीने का अधिकार है, न न न न न
कैसा अंधकार है, हां है

-- २ --
छाती पर पेडया पडा नागरो....
-- ३ --
ये बैरी सरकार सुन लइयो .... हमसे टक्कर मत लइयो ....

नारों के अंश

- शहीद किसान अमर रहे, अमर रहे।
- किसान मजदूर एकता जिंदाबाद, जिंदाबाद।

- जीना है तो मरना सीखो, अपने हक पर लड़ना सीखो।

- खेत हमारा, बीज विदेशी नही चलेगा, नहीं चलेगा।
- देश हमारा माल विदेशी नहीं चलेगा, नहीं चलेगा।
- संग्राम जिंदगी है, लड़ना उसे पड़ेगा,
- जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा। .... रीतू
- है बहुत अंधकार, सूरज उगना चाहिए...।
- हो जाओ तैयार साथियों अर्पित कर तन मन धन, मांग रहा बलिदान वतन।। ..... रीतू
- दूध दही के देश में पेप्सी कोला नहीं चलेगा।
- बी.टी. कॉटन धोका है, धक्का मारो मौका है।
- **WTO** धोका है धक्का मारो मौका है।
- **WTO** हाय - हाय।
- **WTO** वापस जाओ - वापस जाओ।
- **WTO** भारत छोड़ो - भारत छोड़ो।
- बी.टी. कॉटन हाय - हाय।
- बी.टी. कॉटन किसानों का दुश्मन।

कारवां के दौरान उपयोग किये गये कुछ प्रकाशन